मीराबाई

क्र. ५३५ | रु. १०

तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज़्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर www.amarchitrakatha.com से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को छः वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य तथा धार्मिक कथाएं
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

लोक कथाएं तथा हास्य कथाएं
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

शूरवीर
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

दूरदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ट कहानियाँ

कथा	चित्र	संपादक
कमला चन्द्रकांत	युसूफ लीन	अनंत पै

Amar Chitra Katha Pvt Ltd

ISBN 978-81-8482-303-5
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor,
Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri - 400059, India.
Printed at Zirius Images Pvt. Ltd, Bhiwandi, Thane - 421 311.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com

मीराबाई
कुरखी, राजस्थान, के राणा रतनसिंह अच्छे शासक थे और उनकी प्रजा उन्हें बहुत चाहती थी। उनके एक बहुत सुन्दर पुत्री थी- मीरा

मीरा जब पांच र्ष की थी, एक दिन उनके महल के सामने से एक बरात निकली।

माँ मेरा वर कहाँ है?

चल, मैं तुझे उसके पास ले चलती हूँ।
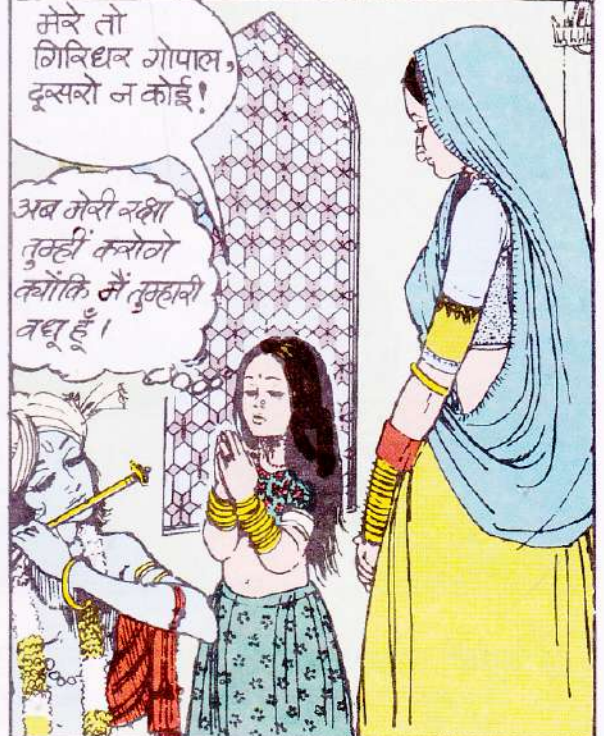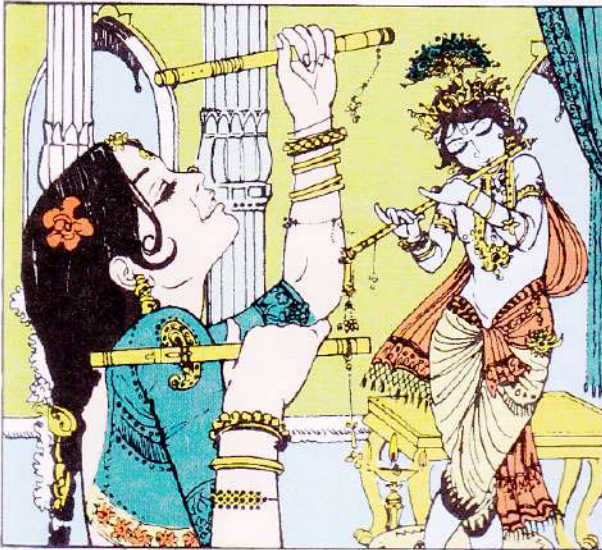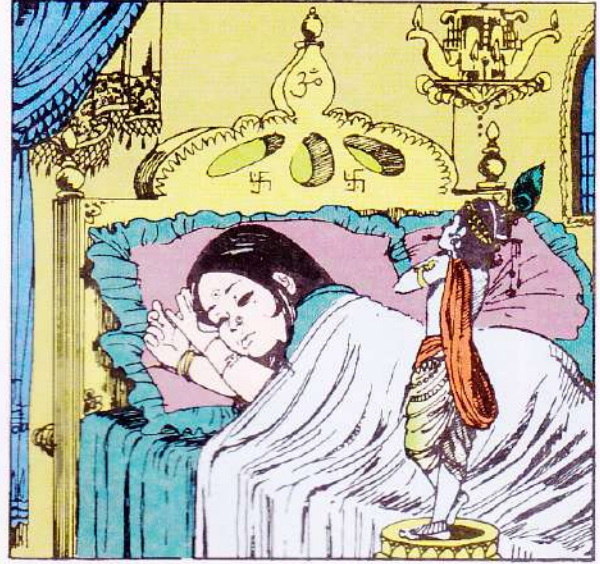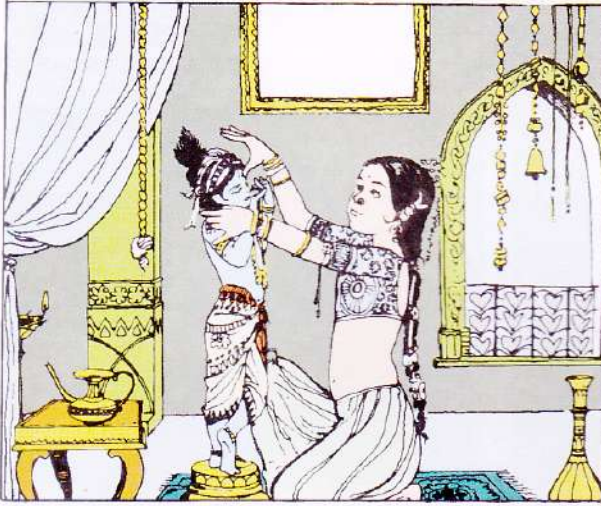
एक दिन बरात आयी और मीरा का विवाह चित्तौड़ के राजकुमार भोजराज से कर दिया गया। भोजराज शूरवीर था और मुग़लों से बेहद घृणा करता था।
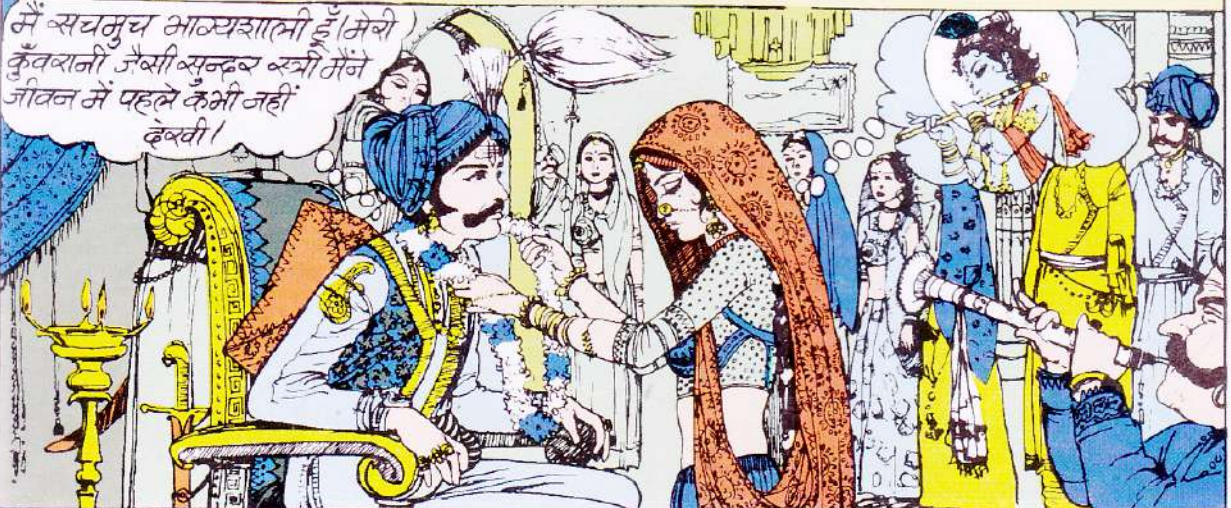
मैं सचमुच भाग्यशाली हूँ। मेरी कुँवरानी जैसी सुन्दर स्त्री मैंने जीवन में पहले कभी नहीं देखी।
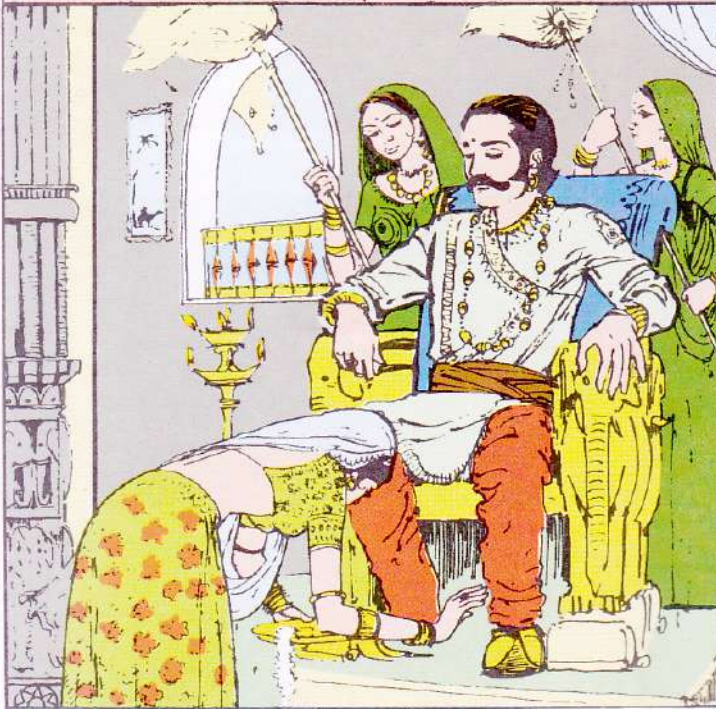
मीरा आदर्श हिन्दू पत्नी थी।
उसका पति उससे बहुत प्रेम करता था।

परन्तु गृहस्थी का नित्य-प्रति का काम पूरा करते ही मीरा अपने दैवी पति– गोपाल के ध्यान में लग जाती थी, जिसकी मूर्ति वह पीहर से साथ लायी थी।

उसकी सास को यह बात नहीं सुहाती थी।
हमारी कुल देवी दुर्गा हैं। उनकी पूजा किया करो।

मीरा को यह स्वीकार न था।
क्षमा करो, माँ जी, मैं तो अपने को भगवान कृष्ण के अर्पण कर चुकी हूँ। और किसी देवी-देवता की पूजा नहीं कर सकती।

ऊदा सहेलियों के साथ भोजराज के पास आयी।

क्षमा करना, भाई, क्या आपका अपनी पत्नी पर कोई अधिकार नहीं है? क्या आपके पौरुष में कमी है? लज्जा का विषय है कि आपकी पत्नी अपनी करतूतों से चित्तौड़ पर और आप पर कलंक का टीका लगा रही है।

भोजराज तुरन्त तलवार खींच कर मन्दिर के अन्दर गया -

बता तेरा प्रेमी कहाँ है- उसे मार डालूँगा!

मीरा लागो रंग हरि। औरन सब रंग अटक परी॥
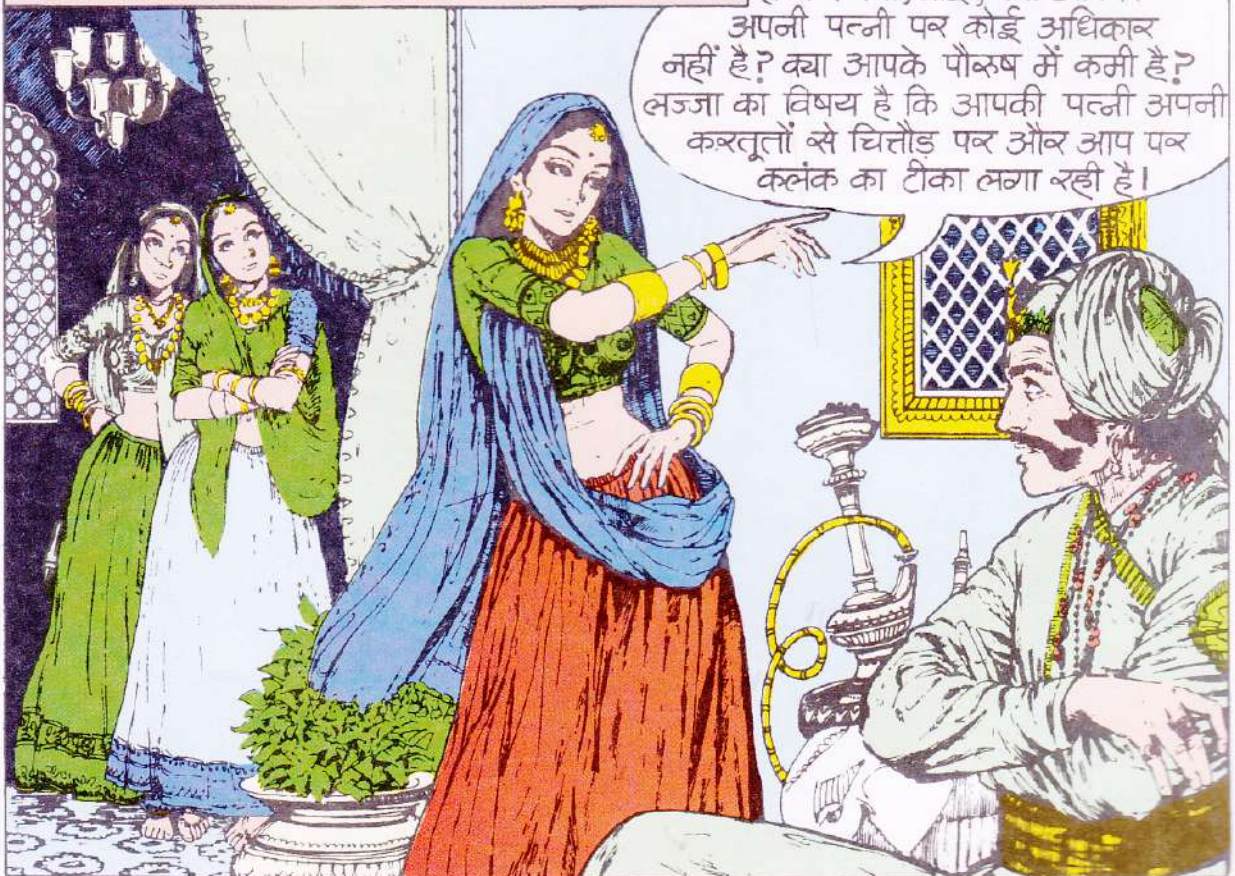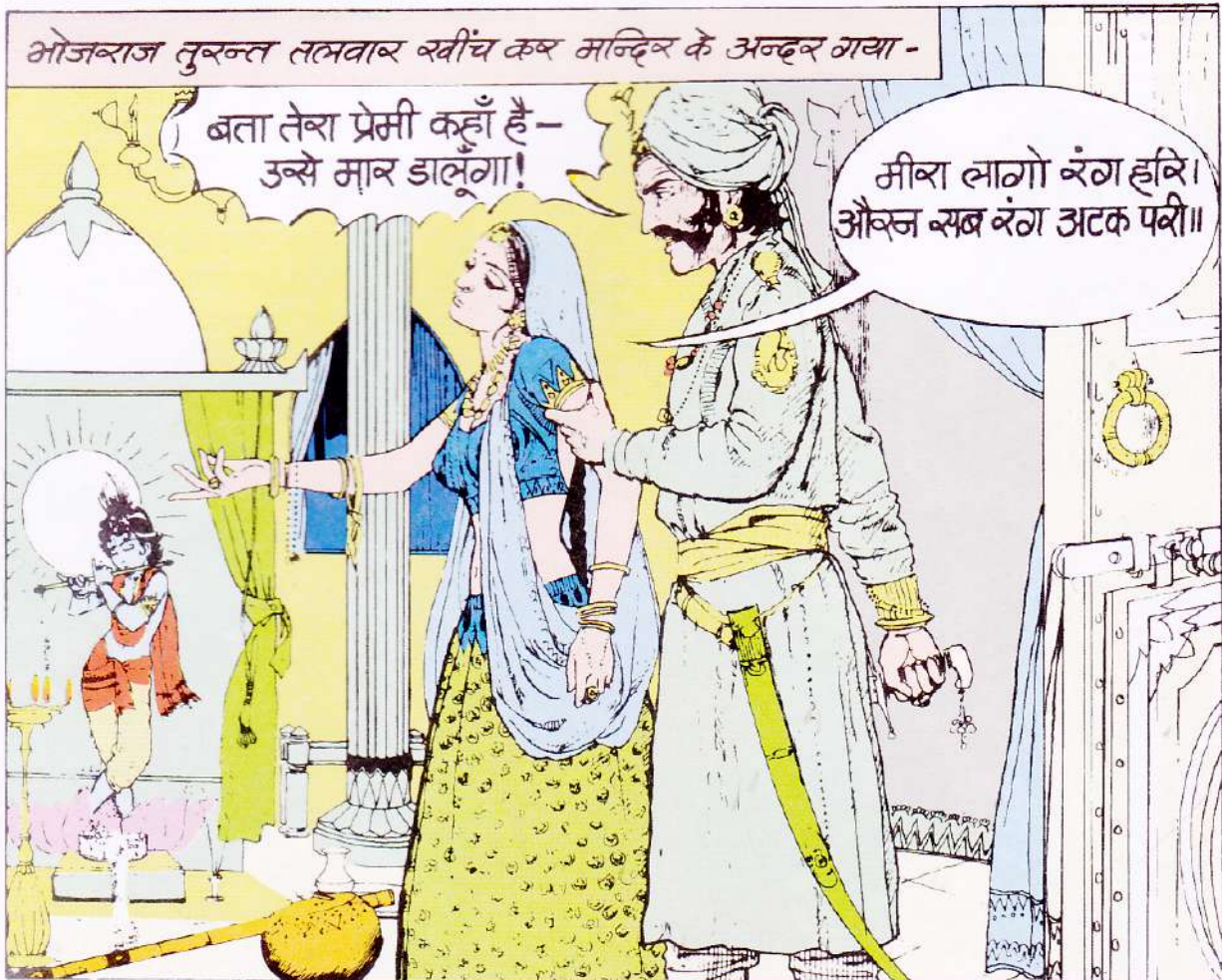
भोजराज को विश्वास हो गया कि उसकी पत्नी पागल है। उसे प्रसन्न रखने के लिए उसने एक मन्दिर बनवा दिया ताकि वह अपने प्रेमी की मूर्ति की जी भर के पूजा कर सके! कुछ ही दिनों में मीरा के पास भक्तों की भीड़ जमा होने लगी। वह अपने भगवान के सामने गाती, नाचती और प्रेम में बेहाल हो जाती।
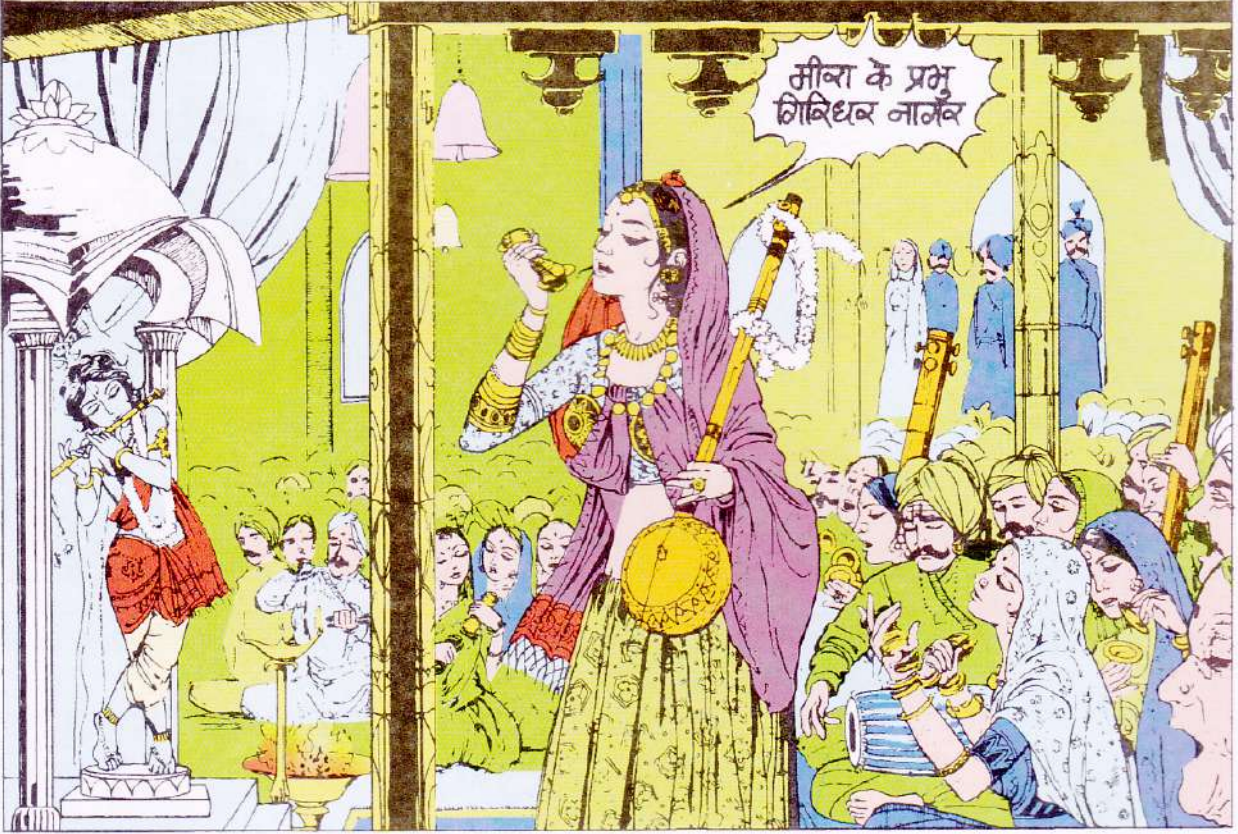
भगवान कृष्ण के प्रति मीरा की भक्ति तथा उसके नाचने, गाने आदि का समाचार दूर-दूर तक फैल गया। मुग़ल बादशाह, अकबर, और उसके दरबारी गायक, तानसेन, ने भी सुना।
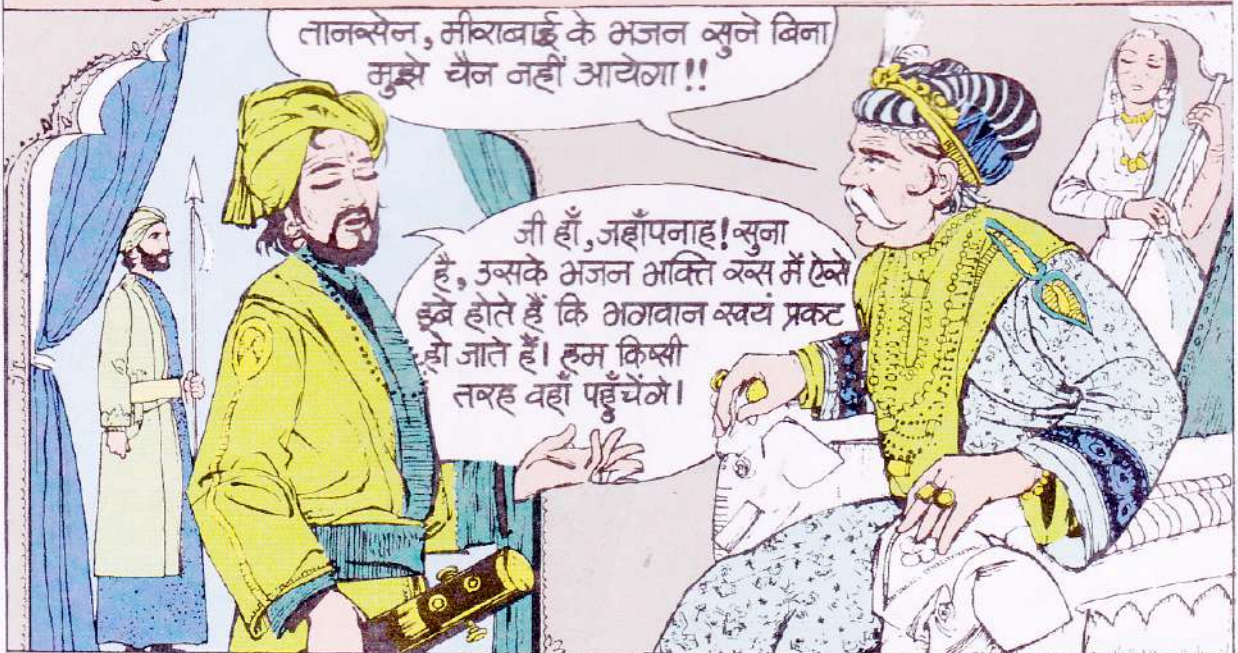
जैसे ही भक्त आने लगे उसने भजन गाना शुरू कर दिया। कुछ भक्त उसके साथ गाने भी लगे और कुछ केवल सुन रहे थे...

पायोजी मैंने नाम रतन धन पायो, जनम जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।
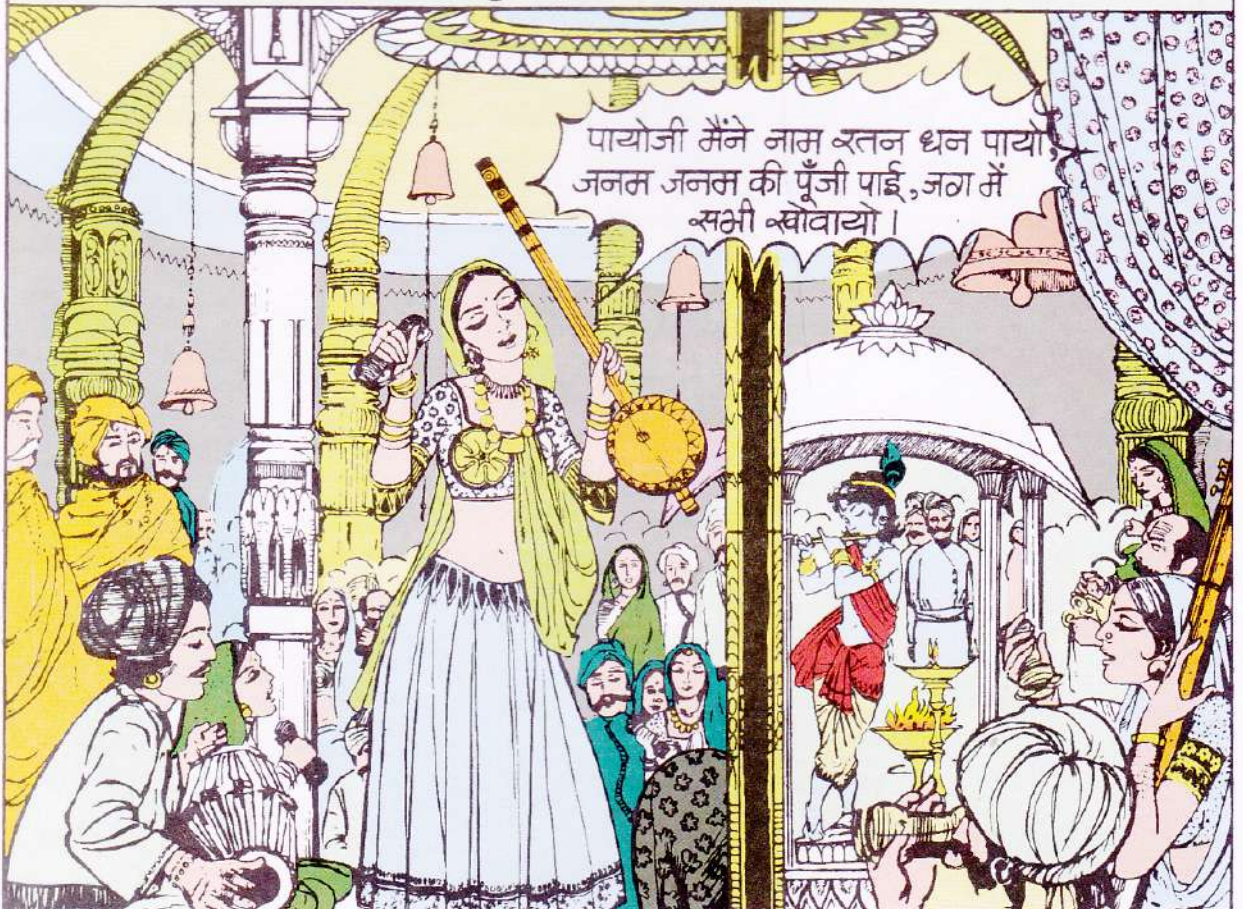
दिन भर के भजन-कीर्तन में अकबर और तानसेन अपना आपा भी भूल गये। अकबर ने आगे बढ़ कर मीरा के पाँव छुए और एक हार गोपाल की भेंट चढ़ाया।
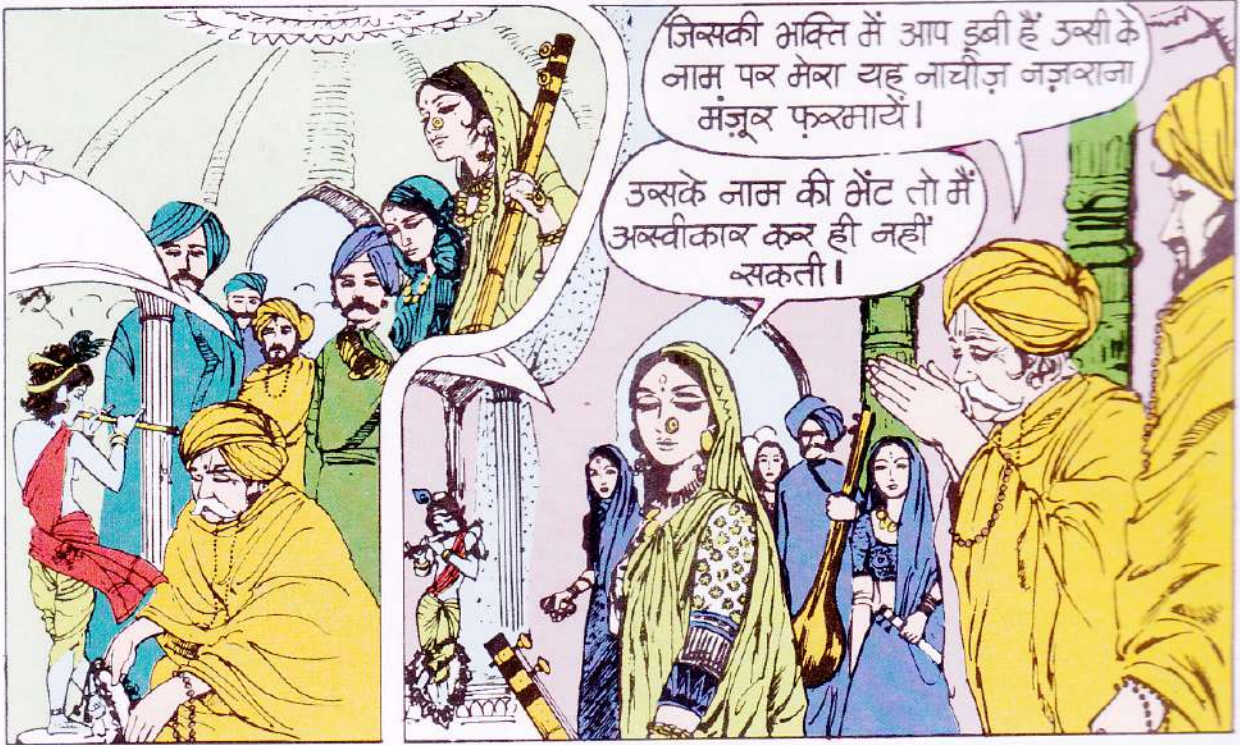
बादशाह भारी मन से वहाँ से चल दिया।

मुग़ल बादशाह दरबारी गायक, तानसेन, के साथ मीरा के पास आया था- यह बात छिपी न रही...

राणा भोजराज ने भी सुना और क्रोध से पागल हो उठा। पागल हो चाहे न हो - उसकी पत्नी ने अशोभन कार्य किया था। उसने मीरा को बुलवाया...
तुम्हारा यह साहस कि एक मुग़ल को अपने - राजपूत कुँवरानी के चरण छूने दिये! यह साहस कि उसे मन्दिर में आने दिया!

मीरा की गम्भीर शान्ति से उसका क्रोध और बढ़ गया!
राजपूतों के नाम पर तुमने कलंक लगाया है - जा कर किसी नदी-नाले में डूब मरो!!!
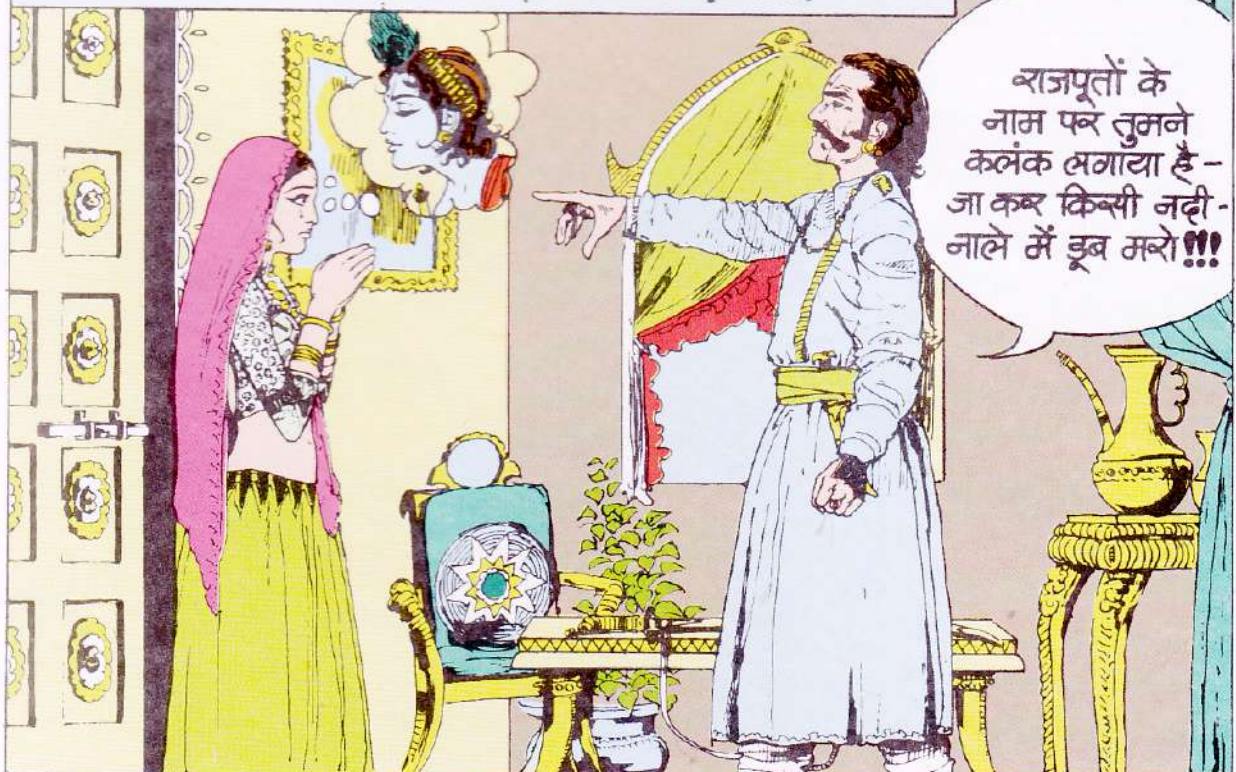
मीरा तो आदर्श हिन्दू पत्नी थी। उसने यह आज्ञा शिरोधार्य की और बिलखती हुई सहेलियों से विदा ली।
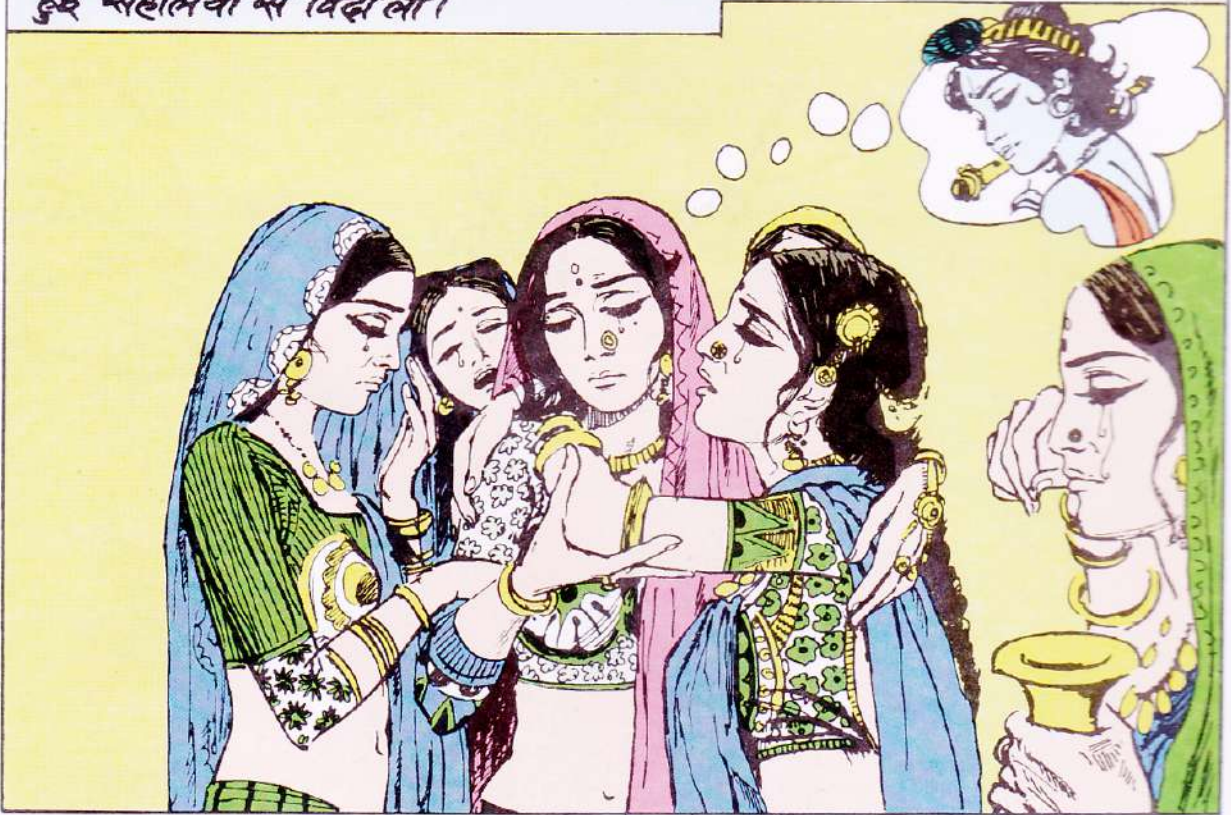
अपने गोपाल की मूर्ति को हृदय से लगाये हुए वह नदी की ओर चल दी।
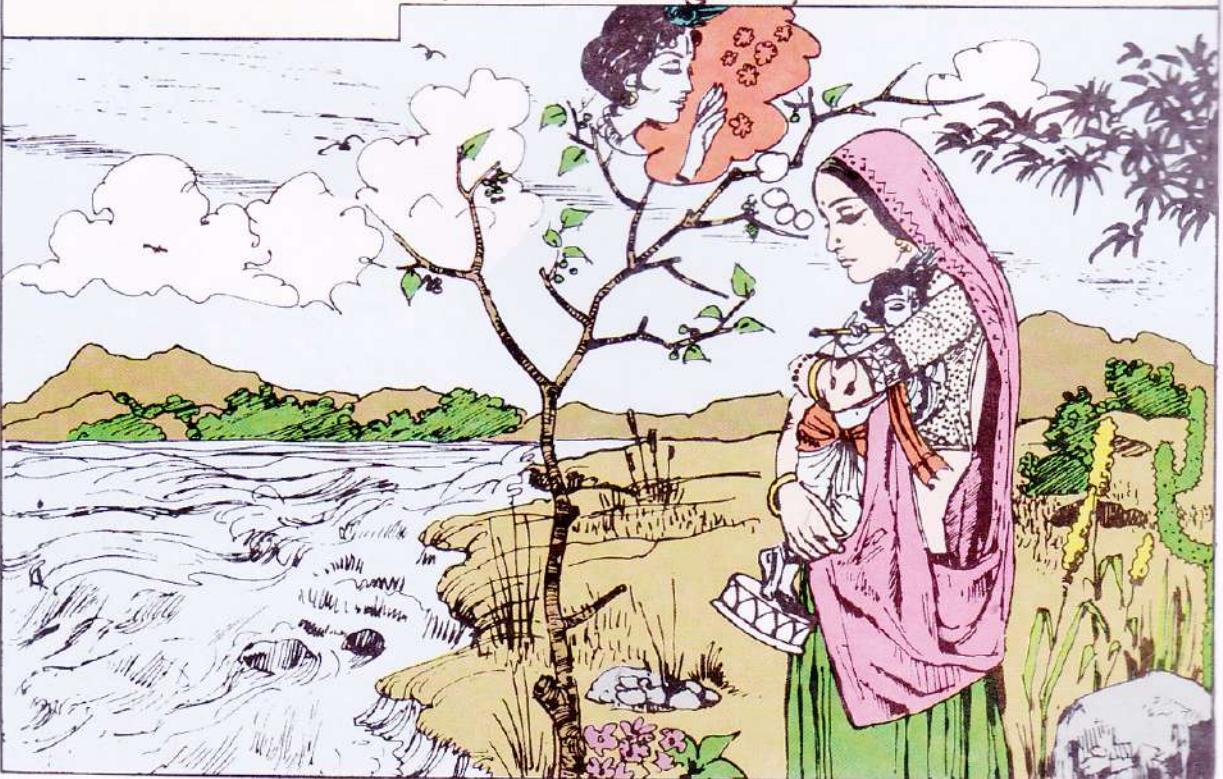
मीरा नदी के तट पर पहुँची। उसी समय मन्दिर के घण्टे बजने लगे। वह नदी में कूदने को हुई कि पीछे से किसी के हाथों ने उसे रोक लिया। उसने गर्दन घुमायी।

उसने देखा कि उसके गोपाल स्वयं खड़े मुस्करा रहे थे। वह अचेत हो गयी।

जब होश आया तब वह उन्हीं की बाँहों में थी।
पति के साथ तुम्हारा नाता समाप्त हो चुका। अब तुम मेरी हो। वृन्दावन जाओ और वहीं मुझे प्राप्त होओ।
मेरे नाथ! मेरे स्वामी!

यह आज्ञा पा कर मीरा नाचती-गाती वृन्दावन को चल दी।
मार्ग की कठिनाइयों का उसे भास तक नहीं हुआ।
मेरे तो गिरिधर गोपाल, दूसरा न कोई ...
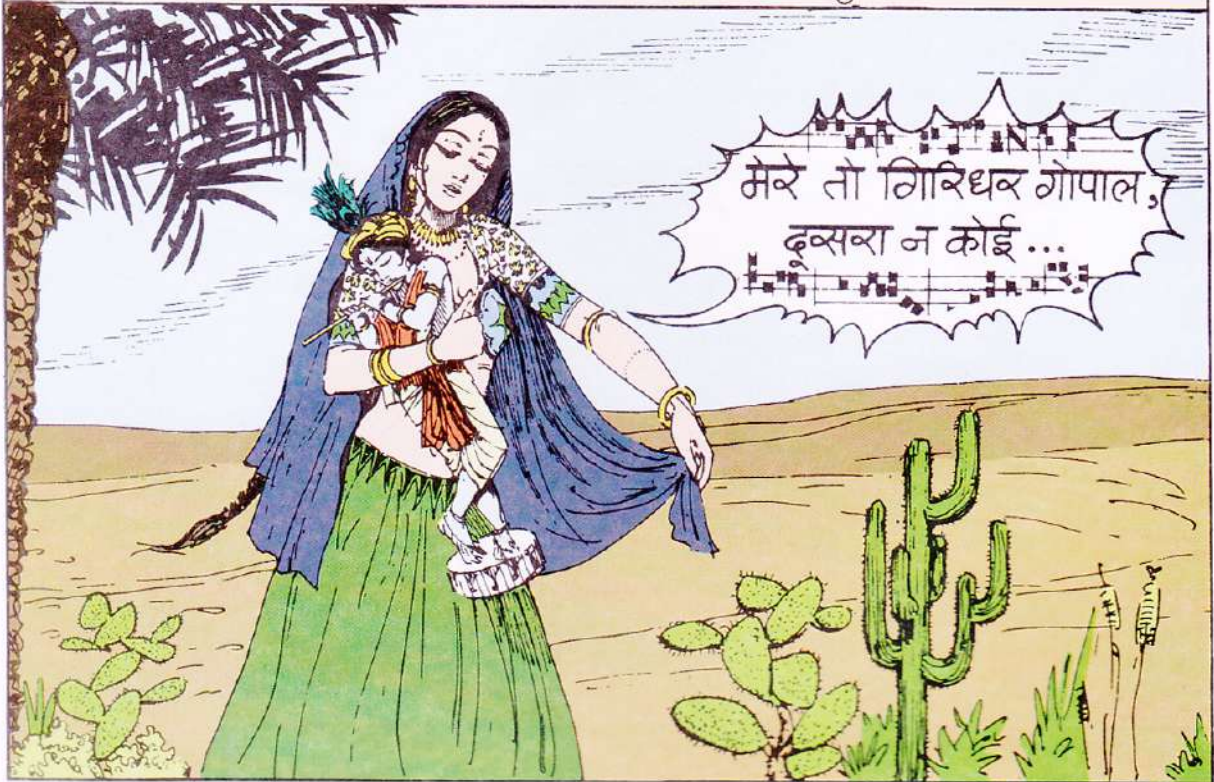
अन्त में वह वृन्दावन पहुँच गयी।

पहुँचने भर की देर थी-
भक्त लोग एकत्र होने लगे।
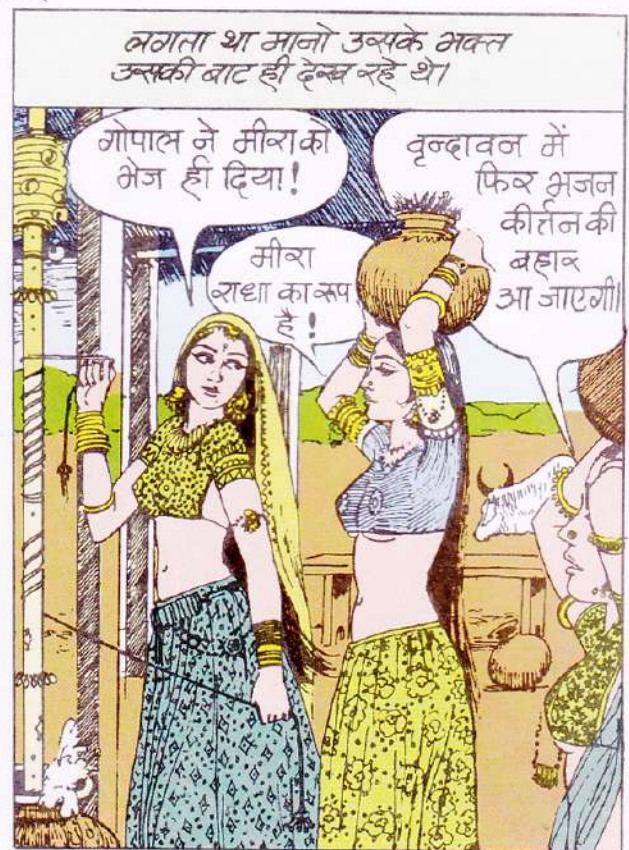
भगवान कृष्ण की उस अनन्य भक्त नारी के दर्शनों के लिए लोग दूर-दूर से आते थे। एक दिन कोई चित्तौड़-वासी आ पहुँचा।

साधुओं के गेरुए वस्त्र पहन कर भोजराज वृन्दावन पहुँचा। मीरा के सामने जा कर उसने हाथ फैलाये।

मैं खुद भिक्षुक हूँ - मैं आपको क्या दे सकती हूँ ?!

जीवन में जो कुछ मुझे चाहिए वह सब तुम मुझे दे सकती हो।
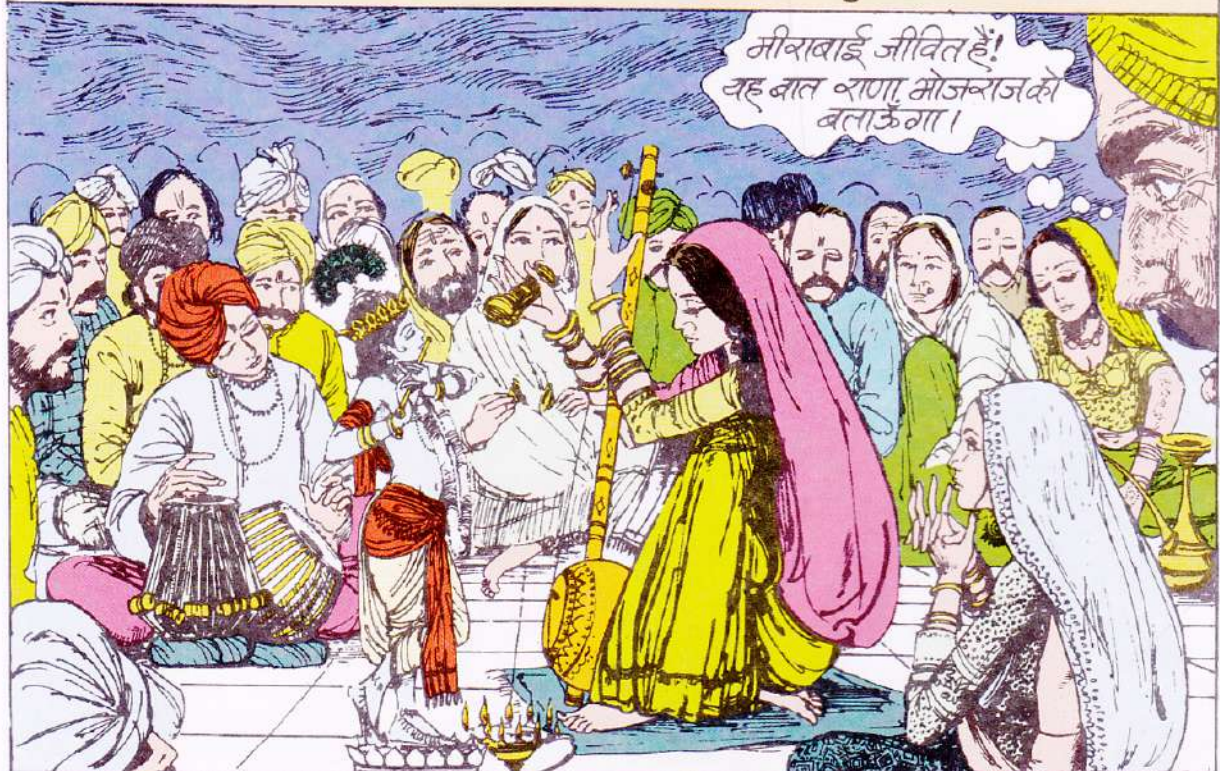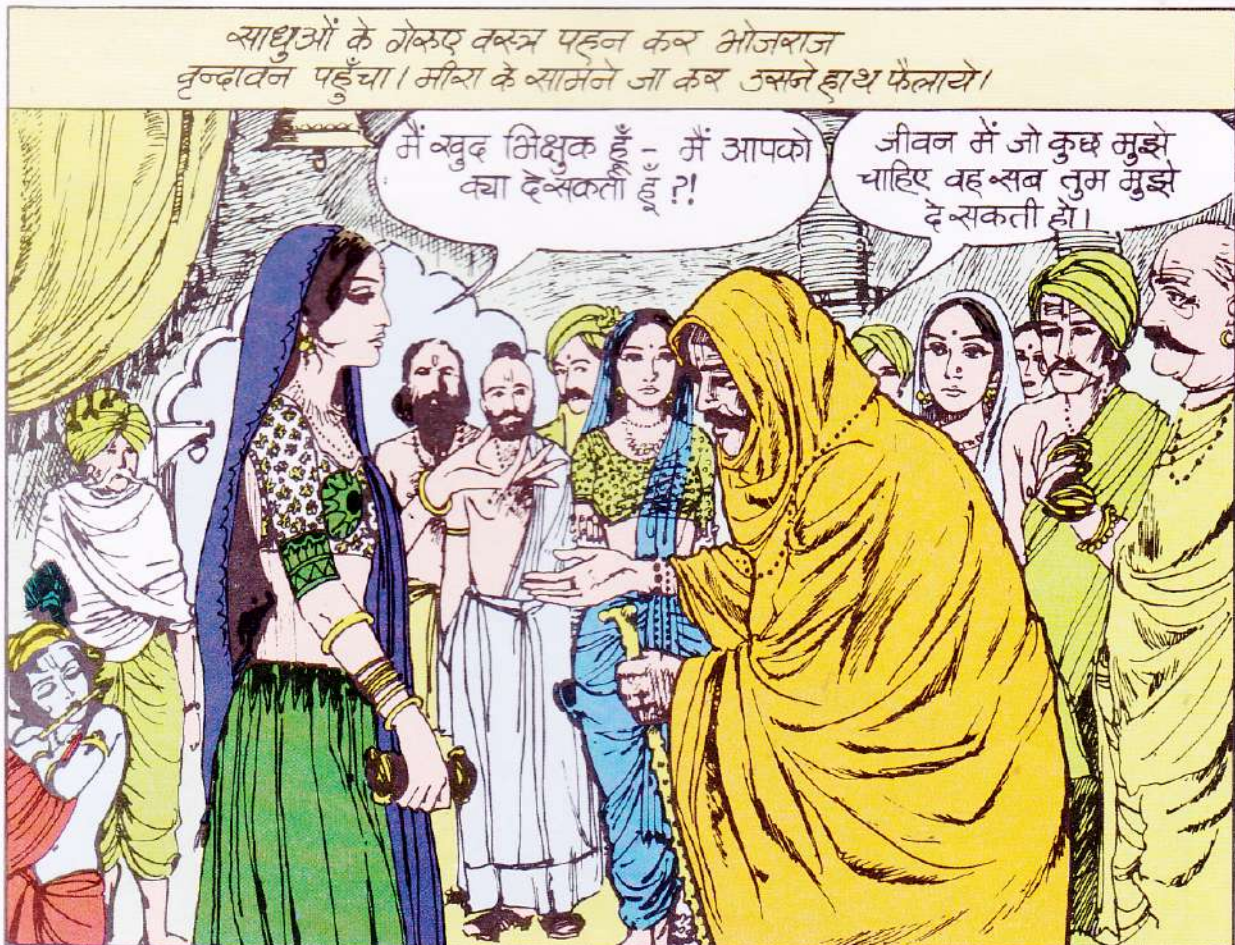
भोजराज ने अपने भगवा कपड़े उतार दिये। मीरा अपने पति को देखते ही उसके चरणों में गिर पड़ी।
मुझे क्षमा कर दो, मीरा- मैं यही भीख माँगता हूँ। वापस चित्तौड़ चली चलो।
मीरा ने क्या कभी अपने पति की आज्ञा टाली है? मैं चित्तौड़ चलूँगी।

मीरा अपने पति व भक्तों के साथ चित्तौड़ लौटी।
हरि मोरे जीवन प्रान अधार, और आसरो नाहीं तुम बिनु, तीनूं लोक मंझार।

मीरा कई वर्षों तक पूर्ण स्वतंत्रता के साथ अपने गोपाल की सेवा-पूजा करती रही।

दुर्जनों की संगत मत करो, ईर्ष्या, लोभ, मोह और मद को अपने मन से निकाल फेंको...
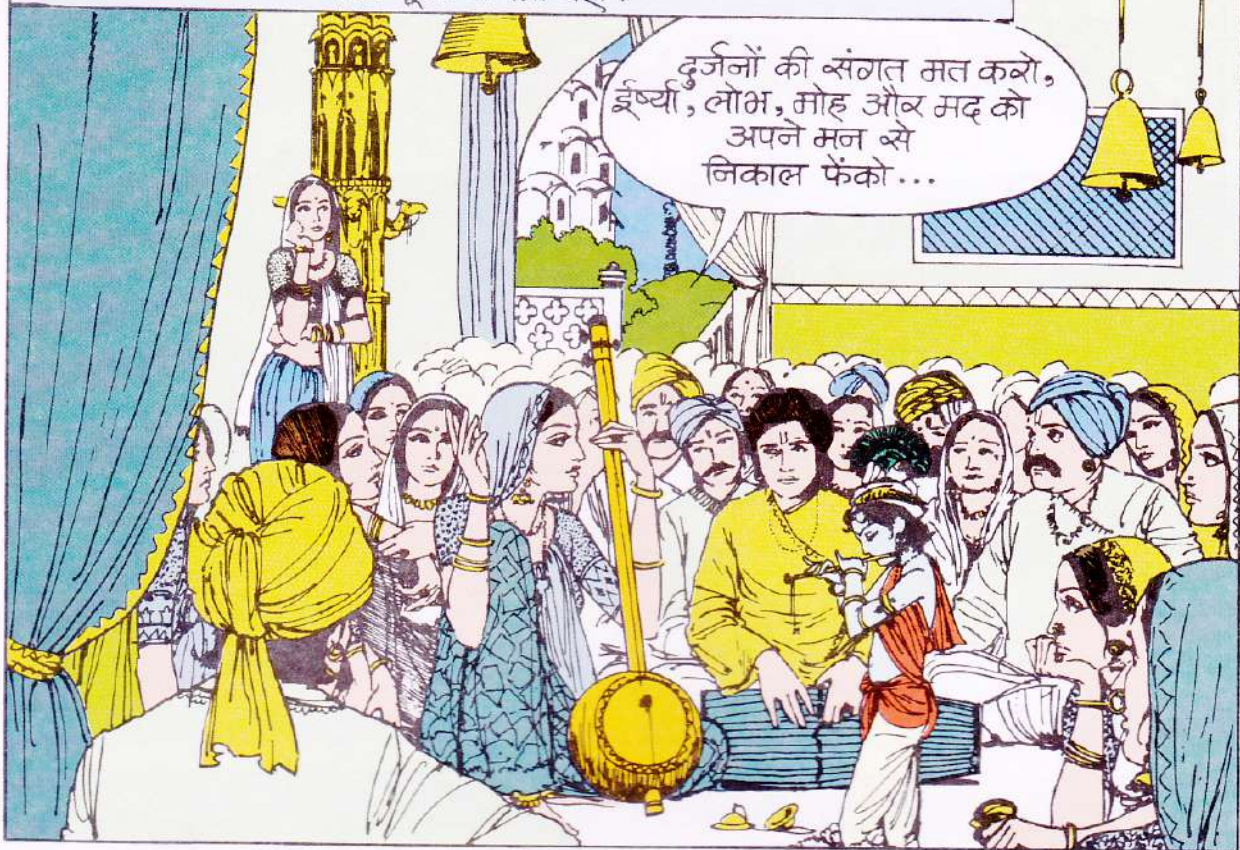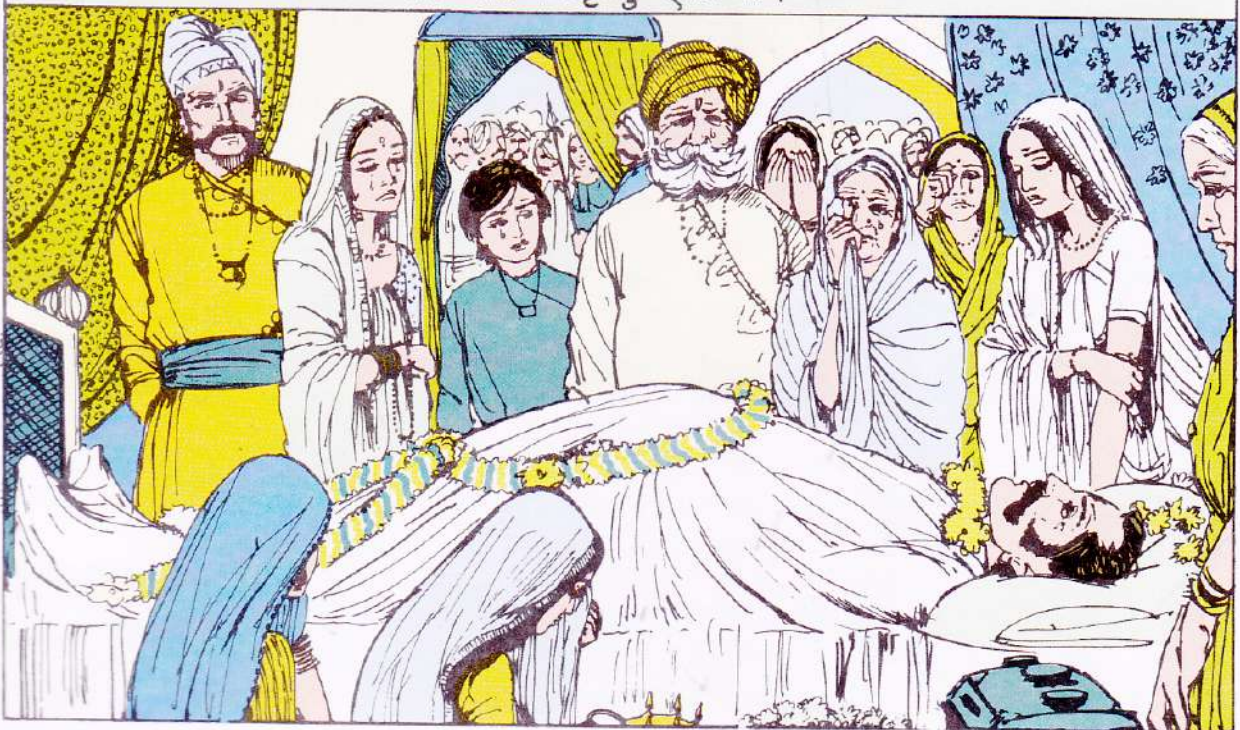
विधवा हो जाने के बाद मीरा पूर्ण रूप से अपने गोपाल की भक्ति में लीन हो जाने को स्वतंत्र हो गयी थी तथापि नये राणा, भोजराज के भाई, ने उसे चैन नहीं लेने दिया।

मेरी आज्ञा है कि अब तुम न तो साधु-सन्तों की संगत करोगी न महल में कृष्ण की मूर्ति के आगे नाचो-गाओगी।

मीरा बहुत दुखी थी ...
गोपाल, महल के मन्दिर में मैं शान्ति से तुम्हारी पूजा नहीं कर सकती। मैं नगर के सार्वजनिक मन्दिर में जाऊँगी
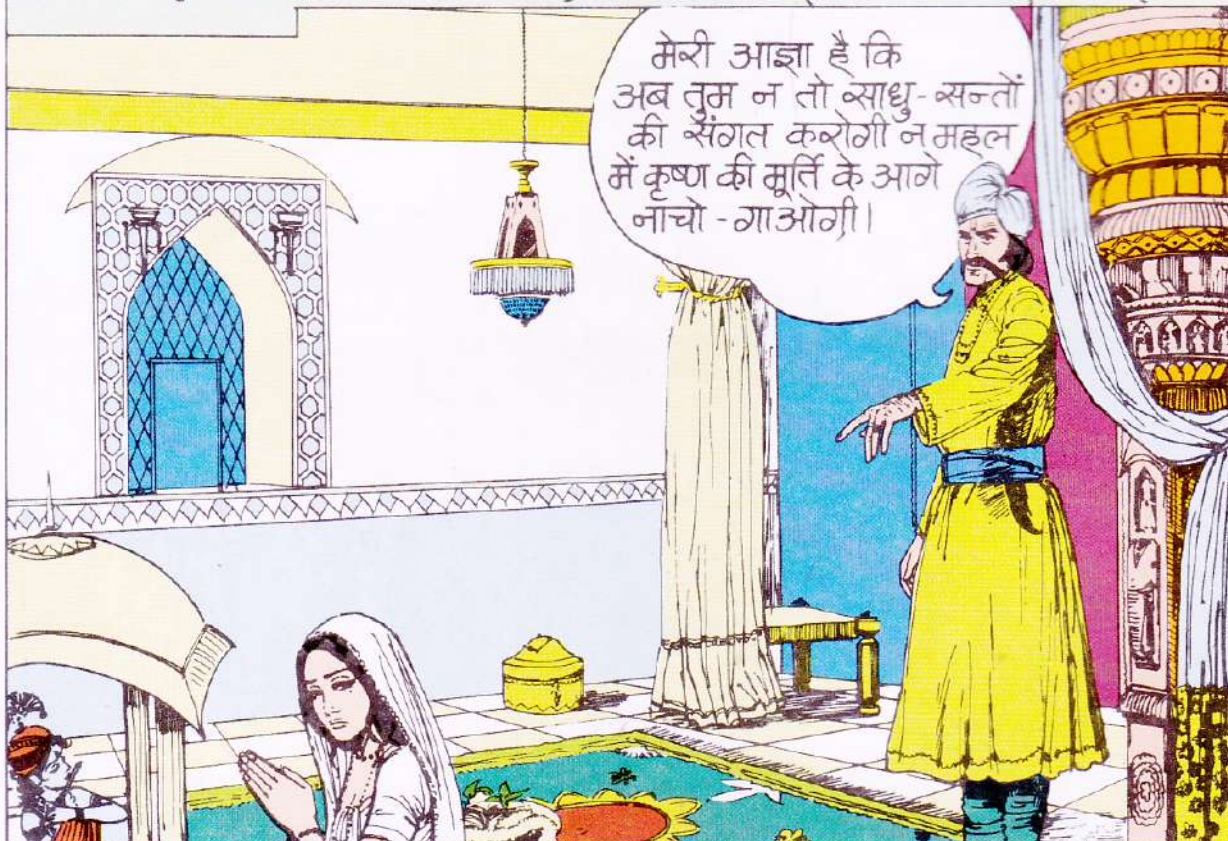
और वह वहाँ गयी।

राणा उसकी हँसी उड़ाने लगा कि तू निर्लज्ज है जो साधुओं आदि से मेल-मिलाप करती है -
पति के साथ सती होना तुझे स्वीकार न था! क्या इसीलिए कि भिखमंगों के साथ गुलछर्रे उड़ाये ?!
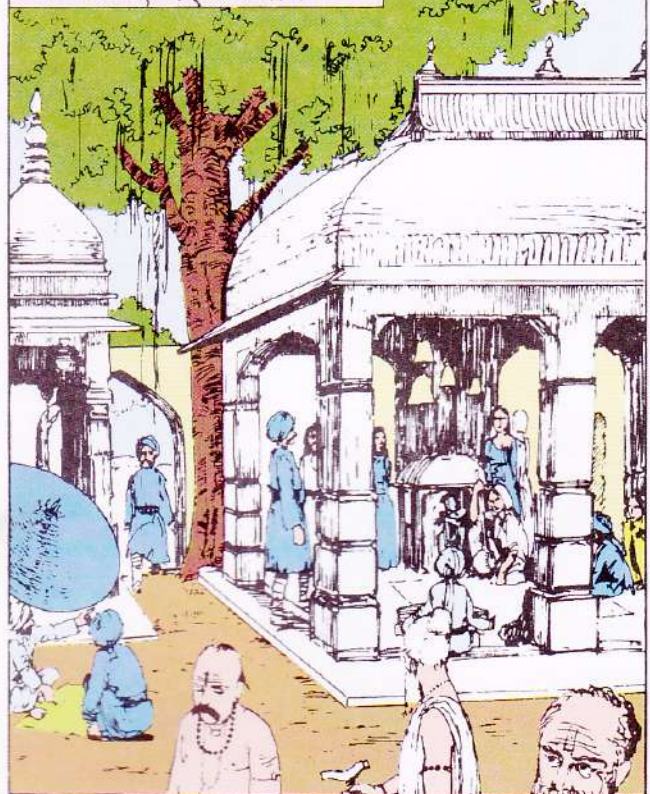
मीरा सारे अपमान को पी कर अपने स्वामी के नाम के भजन गाती रही और नाचती रही।
मीरा प्रभुके हाथ बिकानी। लोग कहैं बिगड़ी।

अपनी साध्वी कुँवरानी के प्रति चित्तौड़ की जनता का प्रेम तथा आदर और बढ़ गया और मीरा का नाम सारे देश में फैल गया।
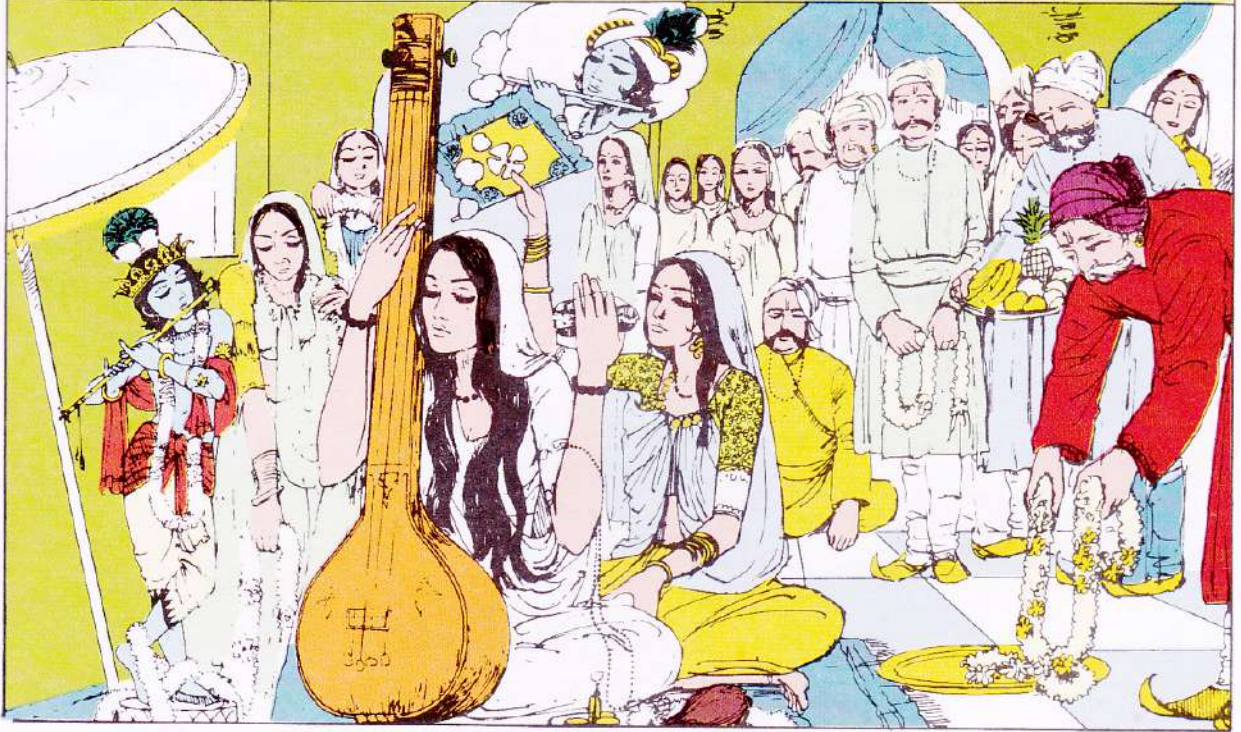
दूर-दूर से साधु-महात्मा और विद्वान अपनी श्रद्धा व्यक्त करने के लिए उसके पास आने लगे।
स्वामी के चरणों में बैठ कर उपासना करो। व्रत-उपवास, तीर्थ-यात्रा आदि से कुछ प्राप्त नहीं होगा। मन और हृदय से भगवान की भक्ति करो।
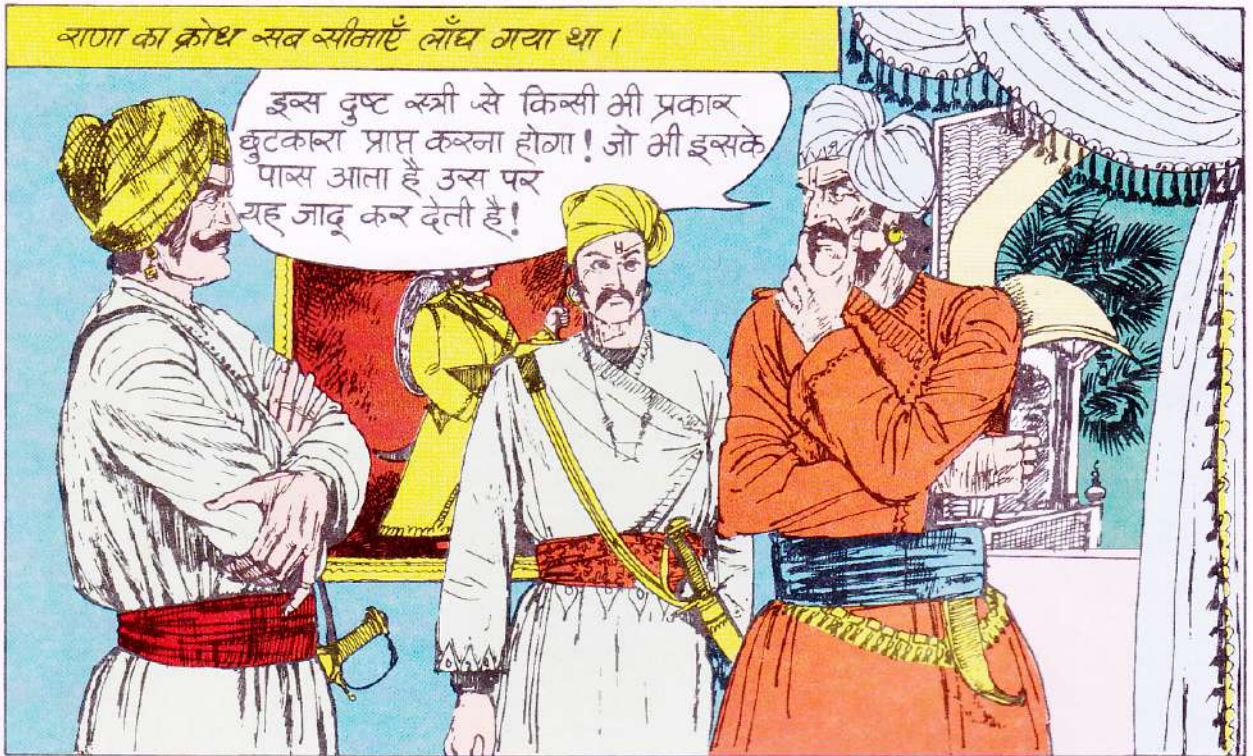
मीरा की भक्ति तो अडिग थी। वह अपने गोपाल का नाम ले-ले कर वैसे ही नाचती-गाती रही।
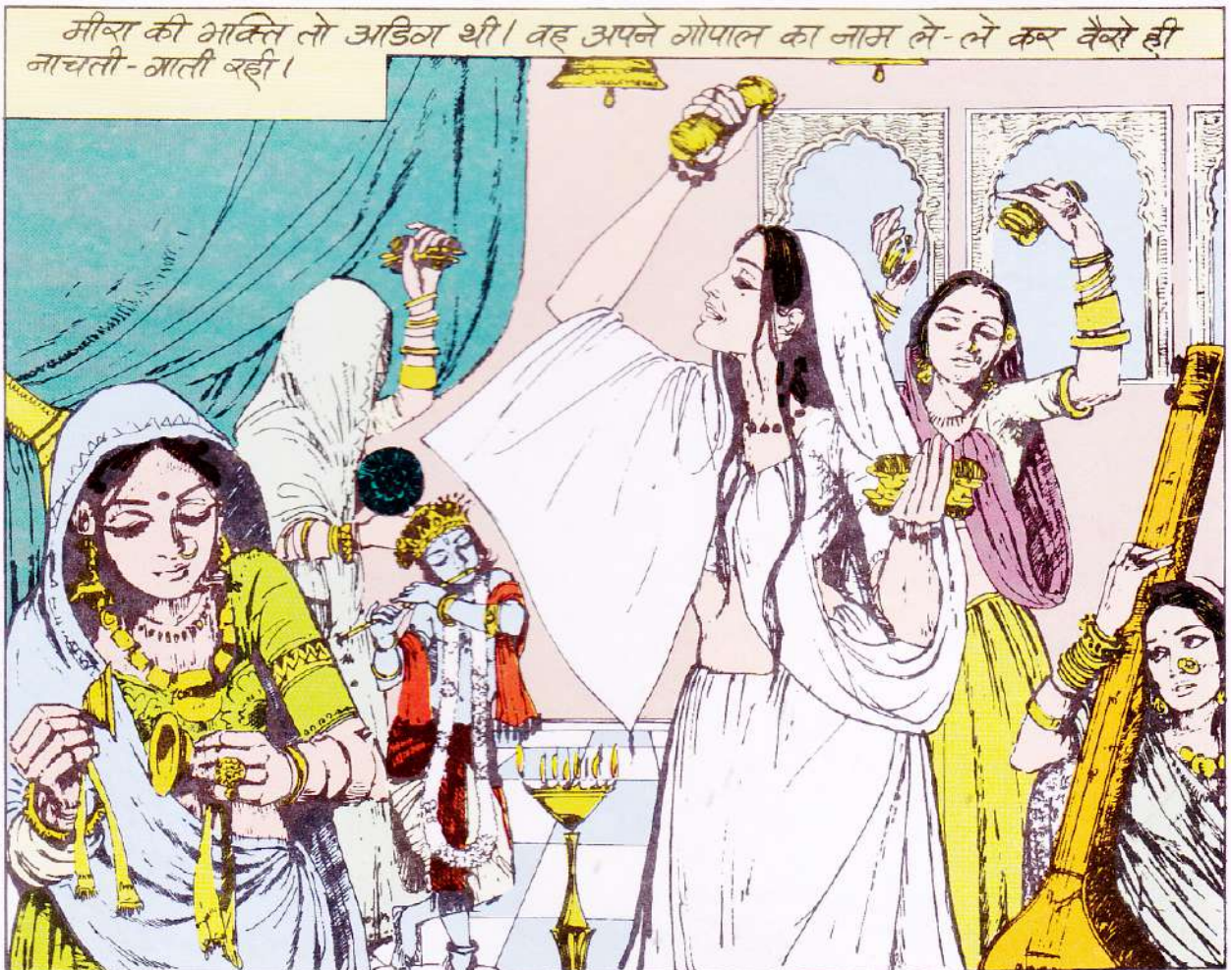
एक दिन राणा ने फूलों की टोकरी में विषधर सर्प उसके पास भेजने का निर्णय किया।
चित्तौड़ का सबसे विषधर नाग पकड़ो और मीरा के पास ले जाओ। कहना कि उसके स्वामी के लिए पुष्पहार है!
जो आज्ञा, राणा जी!

मीरा तो स्वामी के नाम पर आयी हुई किसी भी वस्तु को अस्वीकार करती नहीं थी।
स्वामी की पूजा के लिए भेजी हुई हर वस्तु मैं स्वीकार करूँगी।
और मीरा ने टोकरी खोली तो उसमें - विषधर सर्प सचमुच पुष्पहार बन गया था।

उसने हार मूर्ति के गले में डाला और राणा के दूत को जो हक्का-बक्का हो कर देख रहा था, धन्यवाद दिया।
राणा की सद्भावना के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद!
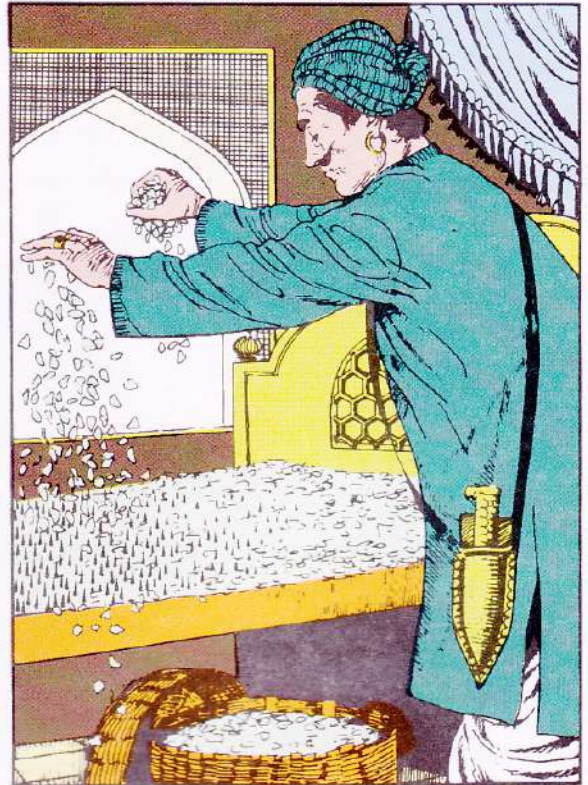
मीरा को इस फेर-बदल का भास भी नहीं हुआ और वह लेट गयी। चमत्कार यह हुआ कि कीलें गुलाब की पँखुड़ियों जैसी कोमल हो गयीं।

मीरा रात भर अपने स्वामी के सपनों में खोई हुई चैन से सोती रही।
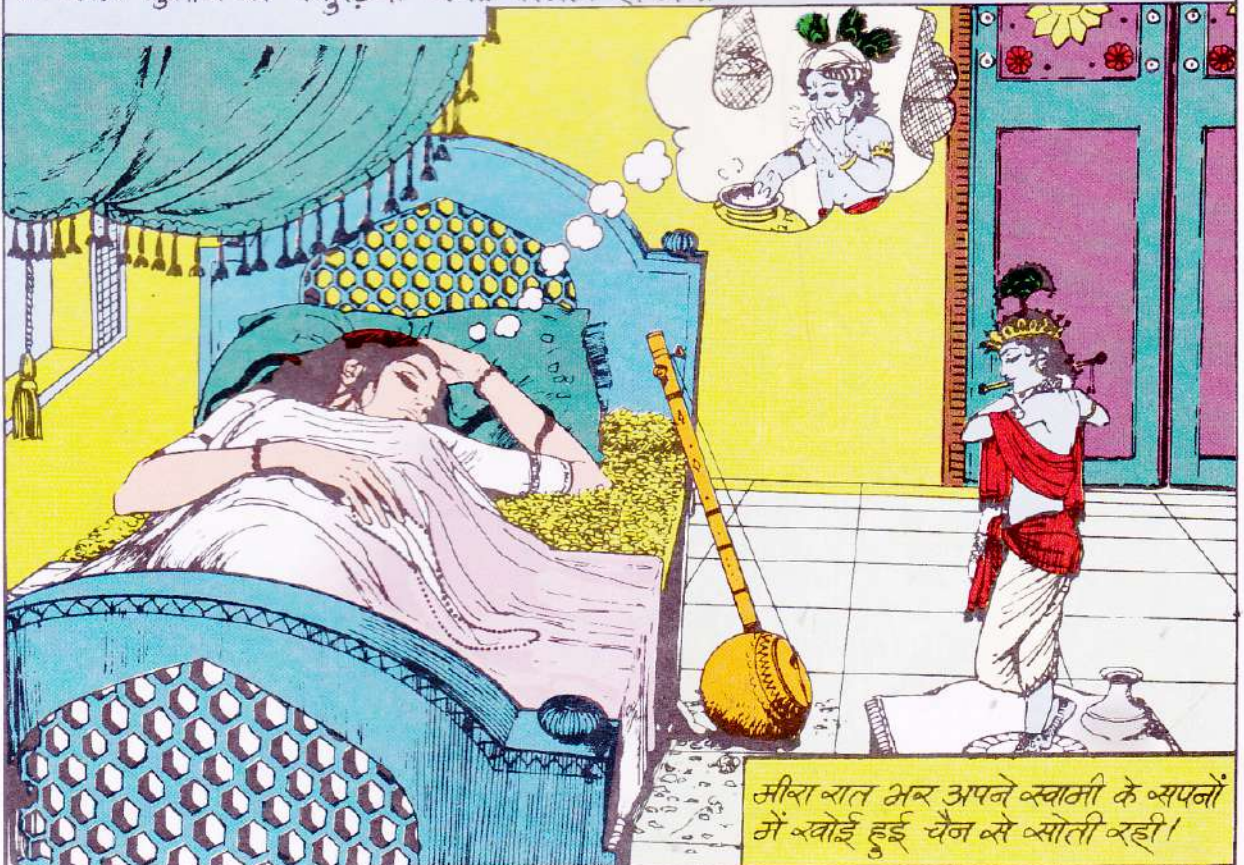
प्रातःकाल मीरा को नित्य-प्रति की तरह प्रफुल्लित मन से अपने गोपाल की सेवा करते देख-कर राणा और उसके दुष्ट सलाहकार आश्चर्यचकित हो गये और क्रुद्ध भी!
मेरे तो स्वामी गोपाल हैं। वे मुझे सब आपत्तियों से बचाते हैं। मुझे अपने स्वामी की सेवा करने से कोई नहीं रोक सकता।

राणा के क्रोध का अन्त नहीं रहा। उसने अपने हाथों से चरणामृत के प्याले में विष मिलाया-
मैं ऐसी व्यवस्था करूँगा कि इस बार मीरा हर्गिज़ बच नहीं सकेगी!

-और अपने विश्वासपात्र आदमी के हाथों मीरा को भिजवाया।
यह चरणामृत मीरा को देना - और अपने सामने ही उसे पिलाना!!

आदमी प्याला मीरा के पास लाया -
मीराबाई, राणा को अपने किये पर बहुत पछतावा है। उन्होंने आपके लिए चरणामृत भेजा है।

मीरा को किसी बात की सुधि रहती ही न थी सो उसने चरणामृत लिया और गट-गट पी लिया -

और वह विष वास्तव में चरणामृत बन गया!
मीरा पर कोई प्रभाव नहीं! मुझे विश्वास नहीं होता!
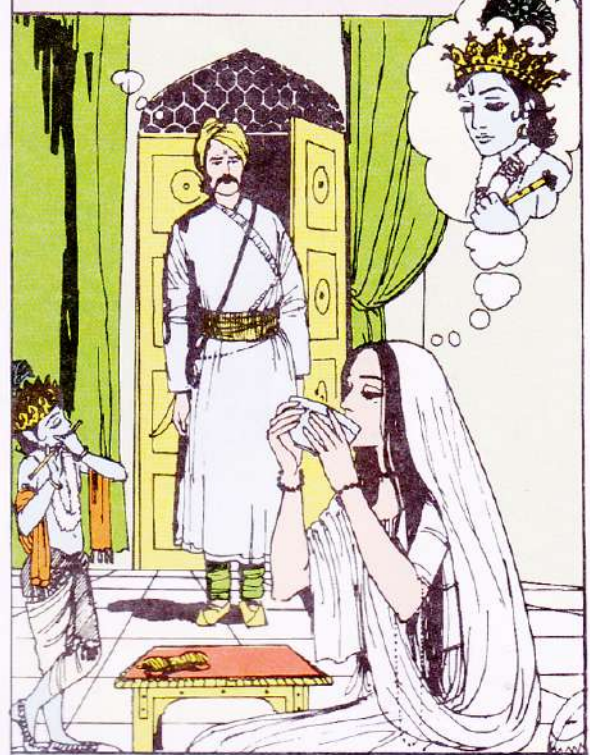
और मीरा वैसे ही मुस्कराती हुई अपने गोपाल के सामने बैठी रही।
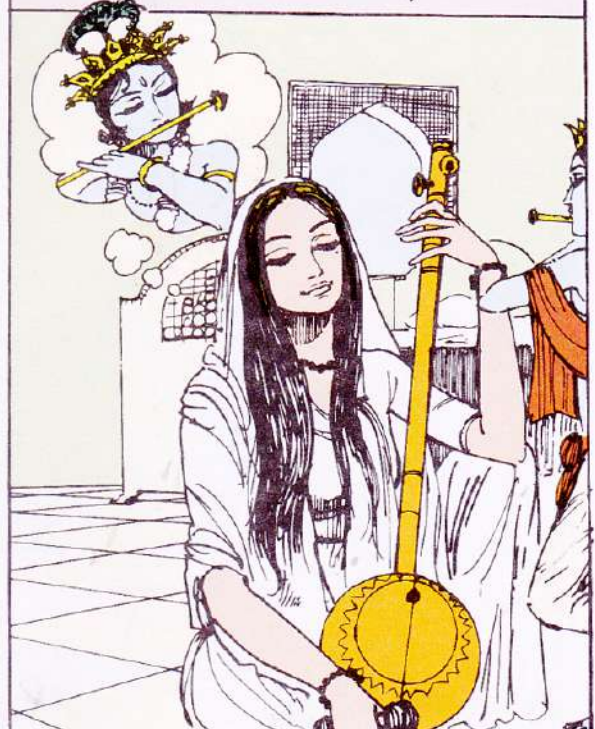
बार-बार असफल हो कर राणा ने मीरा को इतना सताने का निर्णय किया कि वह हार मान जाये।
मीरा सार्वजनिक मन्दिर में पाँव न रखने पाये। उसकी निर्लज्जता से राणा परिवार की बदनामी हो रही है!
जो आज्ञा, राणा जी!

मीरा इस बार-बार की बाधाओं से तंग आ गयी।
गोपाल, क्या ये लोग कभी मुझे शान्ति से तुम्हारी उपासना नहीं करने देंगे? मैं क्या करूँ?
उसने उस काल के अनन्य सन्त, तुलसीदास, को पत्र लिख कर पूछा कि मैं क्या करूँ।

सन्त जो राय देंगे वही करूँगी। वे बुद्धिमान हैं और मेरे स्वामी से मेरी तरह स्नेह करते हैं।

'जाके प्रिय न राम वैदेही, तजिए ताहि कोटि बैरी सम यद्यपि परम सनेही' तुलसीदासजी ने कहा है।
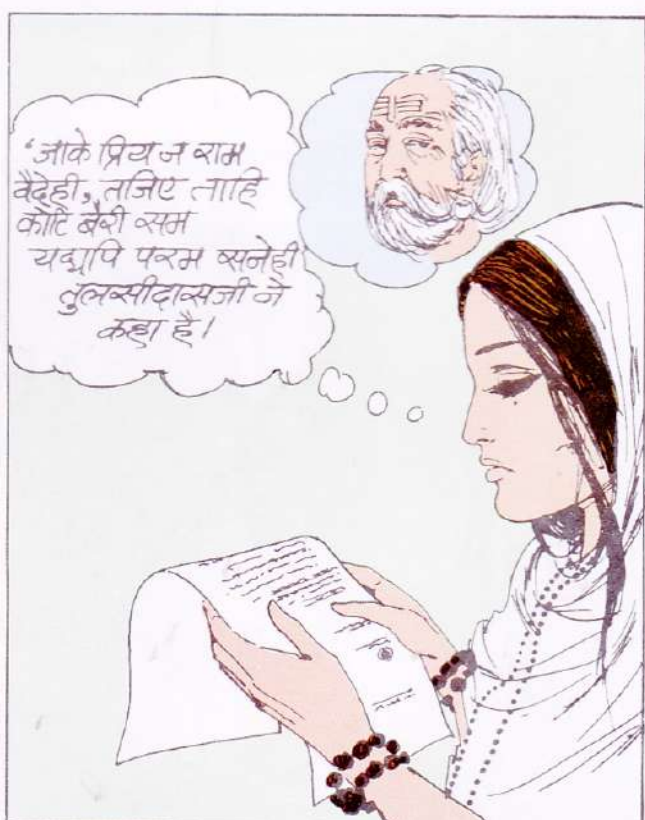
मीरा ने यह बात मान कर चित्तौड़ छोड़ दिया। वह मेड़ता चली गयी जहाँ उसका चाचा शासन करता था। उसने प्रेम से मीरा का स्वागत किया –

उसे शान्ति से पूजा-अर्चना करने की पूरी स्वतंत्रता मिल गयी।
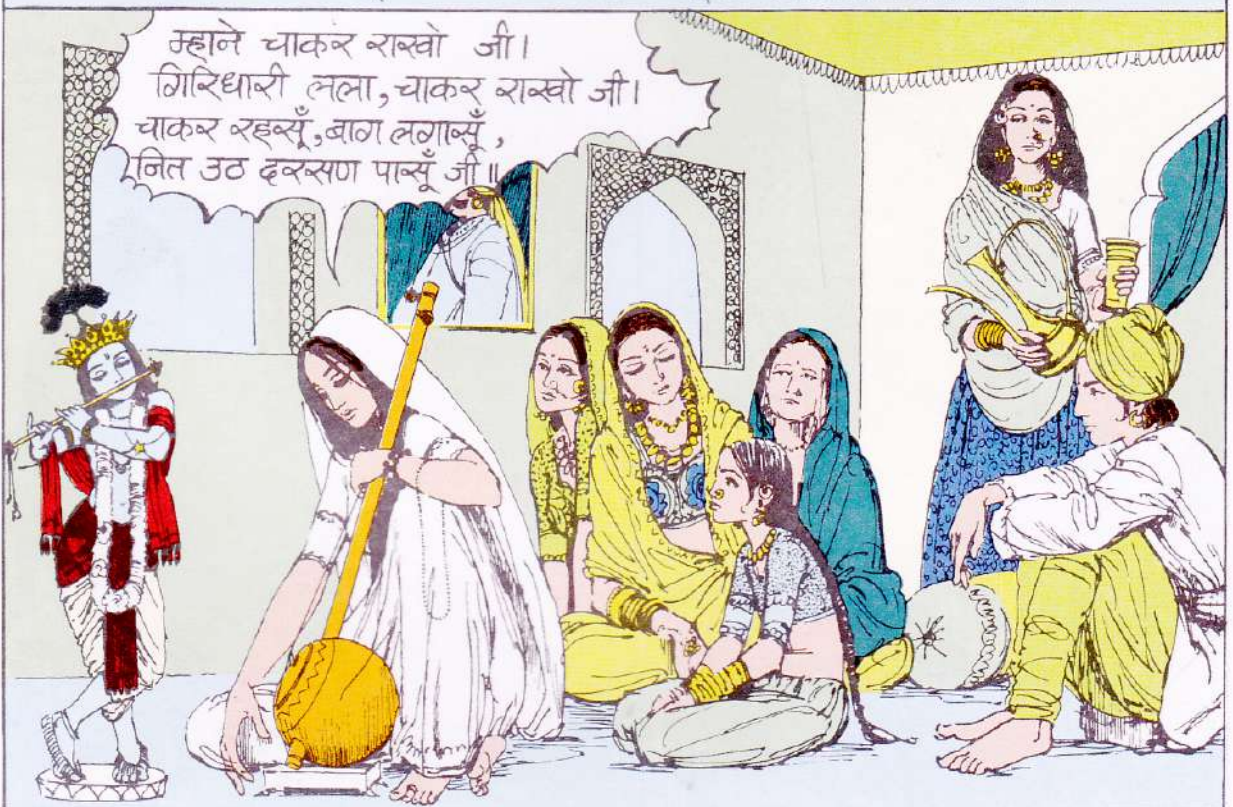
इस प्रकार अपने गोपाल की भक्ति में मीरा ने कुछ और वर्ष बिताये।
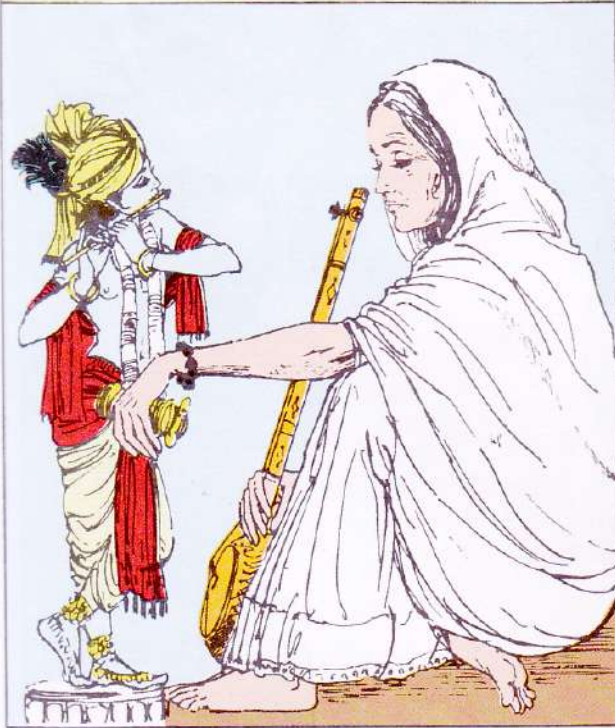
वृन्दावन -
मेरे तो गिरिधर गोपाल,
दूसरो न कोई।
जाके सिर मोर मुकट,
मेरो पति सोई।
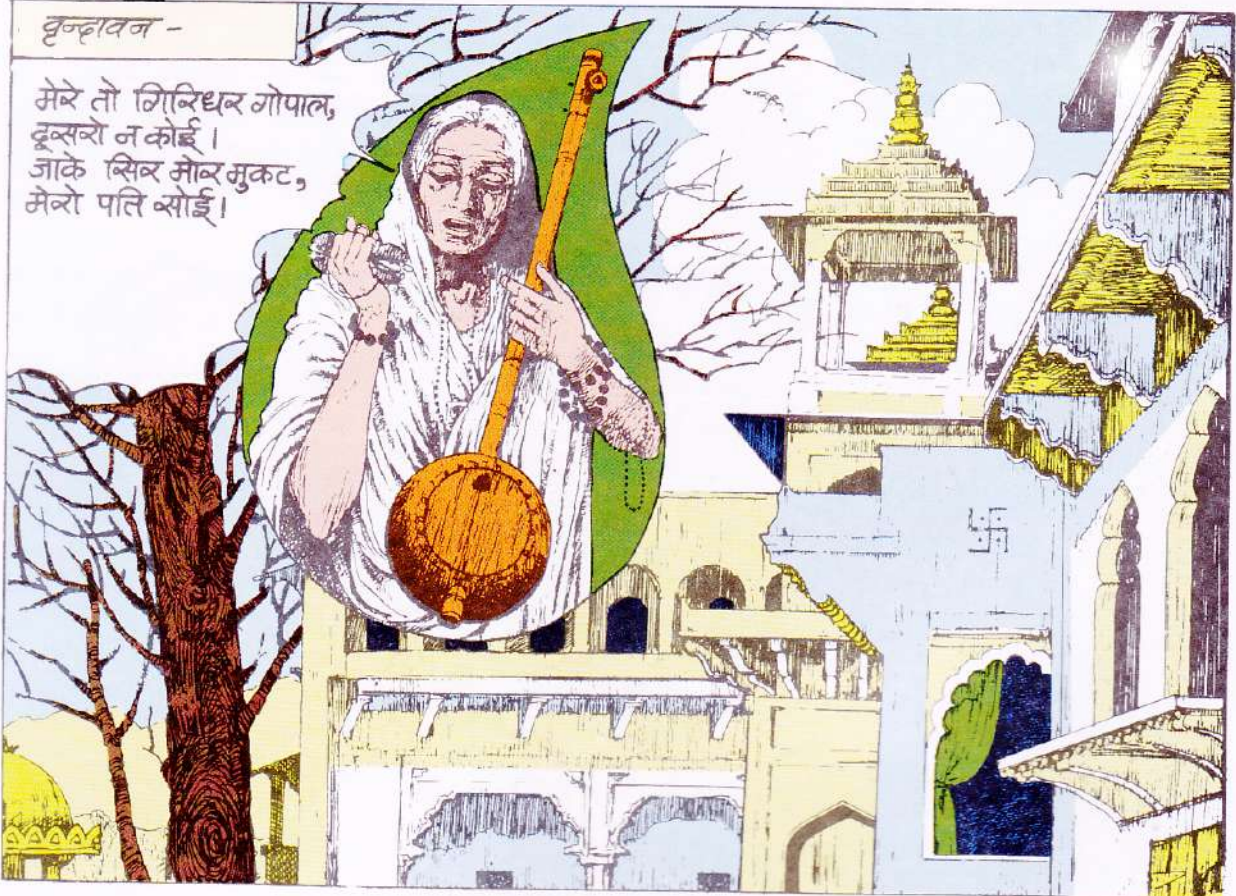
द्वारिका -
पग घुँघरू बाँध मीरा नाची रे...
मैं तो मेरे नारायण की,
-आपहि हो गयी दासी रे...
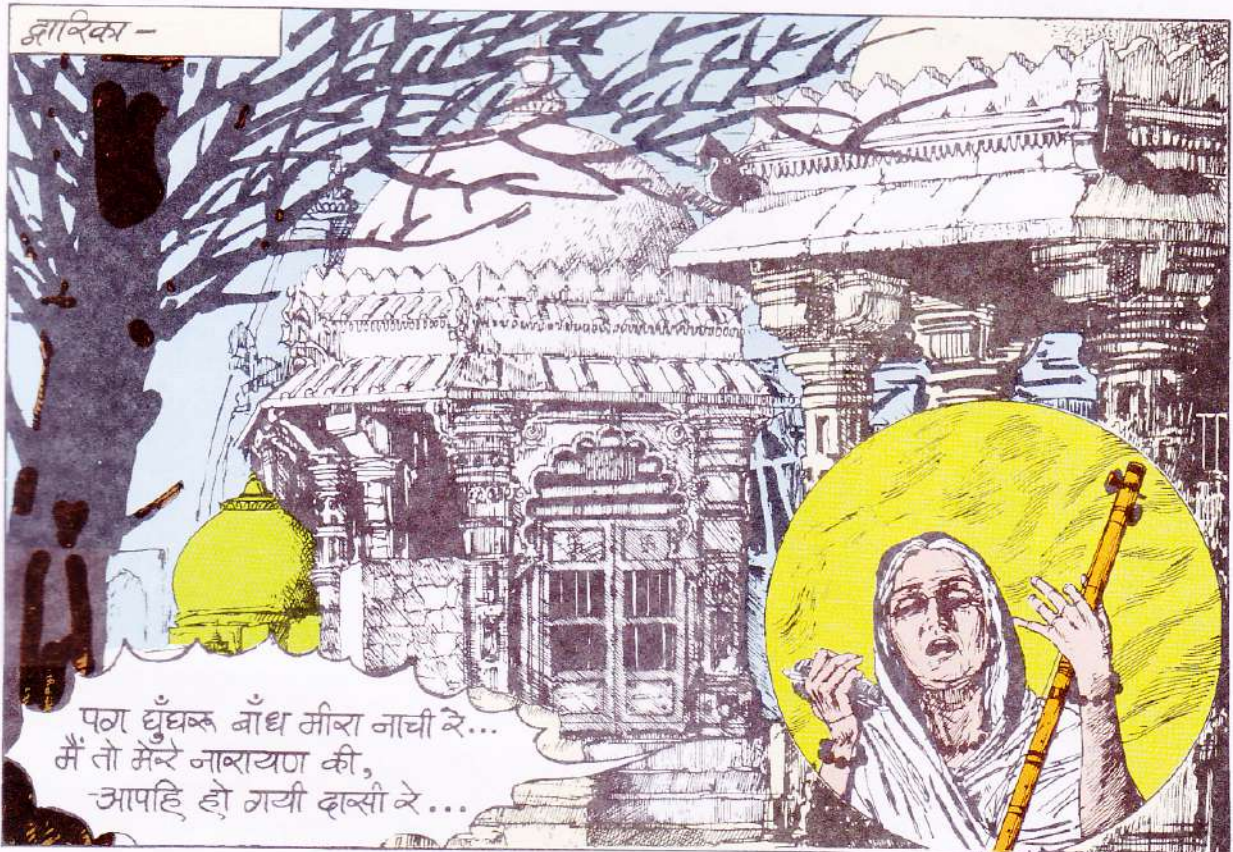
मीरा द्वारिका में ही रह गयी। स्वामी का बुलावा आने वाला था और वह जाने को तैयार थी –
प्यारे दरसण दीज्यो आय, तुम बिन रह्यो न जाय।
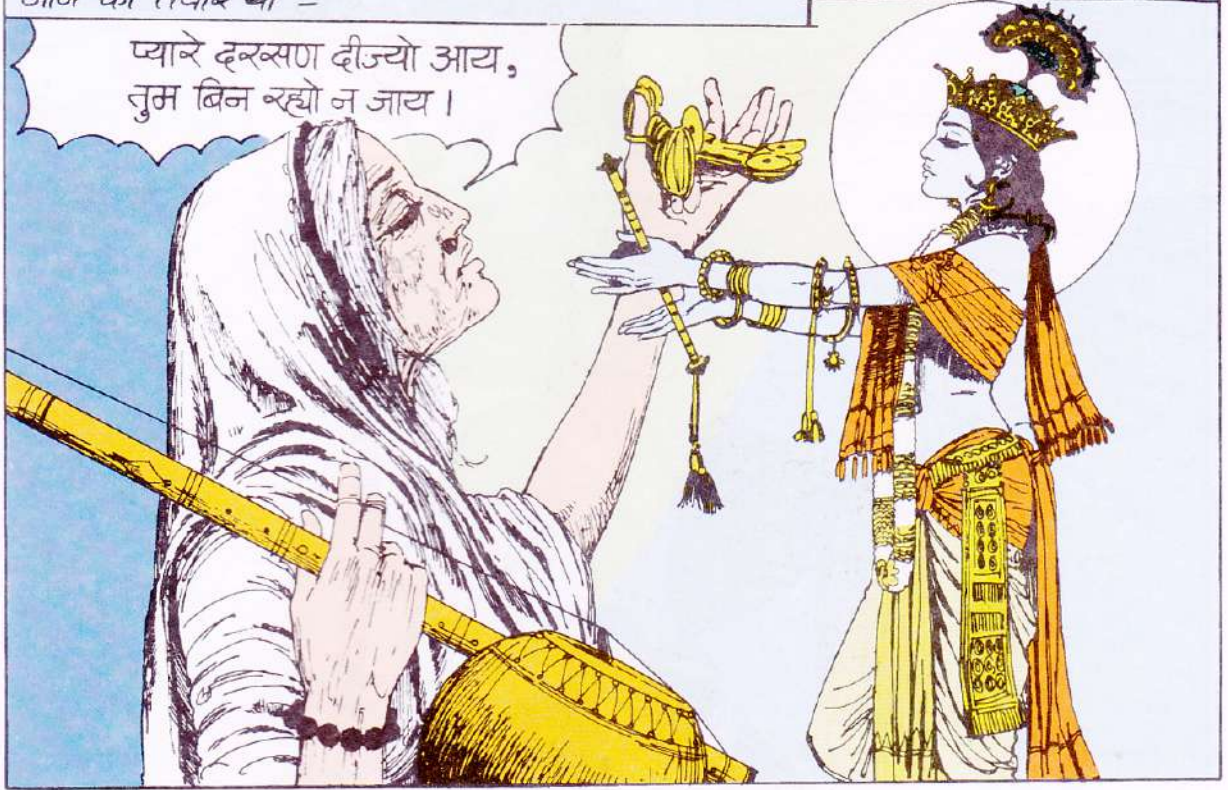
एक दिन वह भजन गा रही थी कि बुलावा आ गया। वह तो प्रतीक्षा कर ही रही थी। नाचते - नाचते ही वह अचेत हो कर अपने स्वामी पर गिर पड़ी।
मैं अपने को तुम्हारे अर्पण कर चुकी हूँ। अन्तिम साँस तक मैं तुम्हारे द्वार पर खड़ी रहूँगी – तुम मुझे जीवन - दान दो चाहे मृत्यु, मुझे सब स्वीकार है।
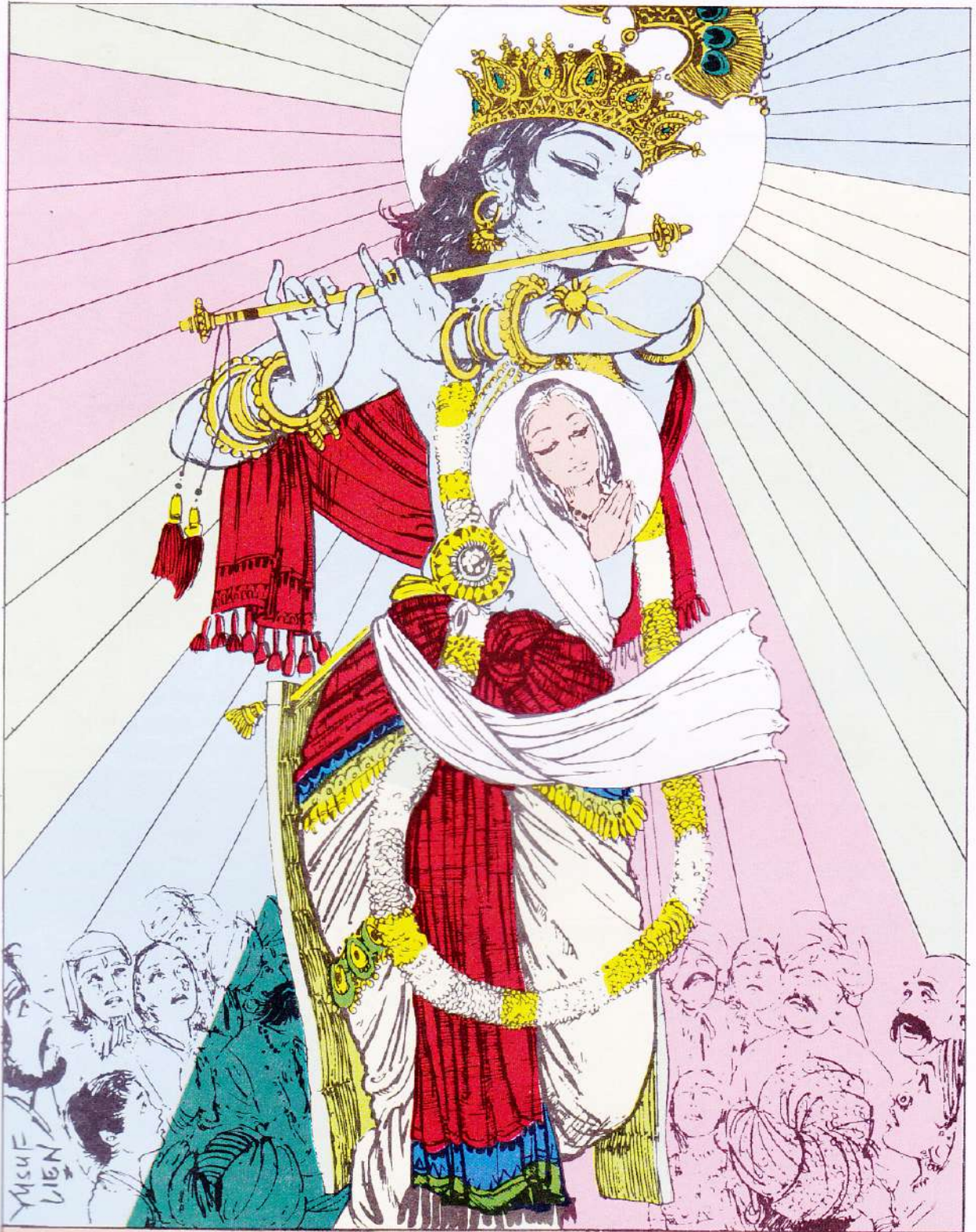
जिस पति का उसने पाँच वर्ष की आयु में वरण किया था, और जीवन भर वह जिसकी भक्ति में डूबी रही, अन्त में वह उसी में लीन हो गयी।

दिव्यदृष्टा

मीरा बाई

कृष्ण अपने विभिन्न रूपों में पूरे भारत में पूजे जाते हैं। उनकी बाल लीलाओं का वर्णन मोहित करता है, परंतु यमुना तट पर बंसी बजाते कृष्ण की छवि अत्यंत लोकप्रिय है। मीरा की रचनाओं में कृष्ण के इसी रूप के दर्शन होते हैं। मीरा ने राजघराने में जन्म लिया और उनका विवाह राजघराने में ही हुआ। परंतु उन्होंने कृष्ण का राज्य चुना और कृष्ण को अपना लिया। ऐसी अनन्य भक्ति थी उनकी। उनके संबंधी उन्हें भक्ति मार्ग से अलग नहीं कर सके। वे तो स्वयं को कृष्ण के प्रति अर्पित कर चुकी थीं और पूर्णतया कृष्णमय हो चुकी थीं। उनके हृदय से निकले भजन कृष्ण की भक्ति से ओतप्रोत हैं। भक्तिरस में डूबे उनके भजन अपनी मधुरता के कारण जन मानस को प्रिय लगते हैं। भारतीय भक्ति साहित्य इन भजनों से समृद्ध हुआ है।

ISBN 978-81-8482-303-5